विश्व स्नेह समाज

o"k 19] vd 9] tu 2020

तृतीय काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. दिए गए विषय पर आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचना वाचन में अधिकतम पांच मिनट की हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता तथा एक सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. द्वितीय चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता तथा दो सौ रुपये की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. तृतीय चरण में पहुंचने वाले प्रतिभागियों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा। प्रथम स्थान पाने वाले प्रतिभागी को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र तथा शेष 08 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। तृतीय चरण के समस्त प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता तथा तीन सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;chvkbZ,u 0553875

विषय : पर्यावरण एवं प्रकृति

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०:
9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः19, अंकः 09
जून : 2020

भारत में शोध धंधा?-----------------------07

हिन्दी जगत में शोध के नाम पर जमा किए जाने वाले ज्यादातर प्रबंध या तो कुछ पुस्तकों से उतारे गए उद्धरण या निजी स्वार्थ की सिद्धि के लिए ऊंचे पदों पर आसीन आचार्यों या साहित्यकारों के गुणगान.

जीवन के बायोडाटा में सिर्फ आज को ही शुमार करें ....-22

इस अंक में......

भारतीय संस्कृति और आधुनिक महिला चिंतन-....10

LFkk;h LrEHk

अपनी बातः कोरोना वायरस से बचना है आसान, ...04

प्रेरक प्रसंग 06

ललित निबंध : आशा 12

कविताए/गीत/ग़ज़लः शबनम शर्मा, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', अनुपमा प्रधान, हितेश कुमार शर्मा 14–15

सोशल मीडिया से : मैं गांव हूं. 16

कहानीः सुनो, सुनो, सुनो-डॉ. मंजरी पाण्डेय, सुबह के सपने-सीता राम पाण्डेय,सब तुम्हारा ही तो है ...१७, २०, २६

साहित्य समाचार, ...30, 31,32

लघु कथाएंः जे.वी.नागरत्नमा, शबनम शर्मा, रोहित यादव........................24

आपस में मिल–जुलकर रहे 25

LokLF;% भारी बटुआ 29

समीक्षाः गुलमोहर 33

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
lj{kd lnL;
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
foKkiu iz/kd
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

C;jks
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 dk0% 09335155949
b&ey%vsnehsamaj@rediffmail.com

lHkh in voSrfud gS
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

ukV%पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

कोरोना वायरस से बचना है आसान, बस रखे ध्यान

कोरोना से डरने की नहीं, ऐहतियात बरतने की जरूरत

लगातार बढ़ते मामलों के साथ देश में लोग कोरोना वायरस से घबराए हुए हैं, हल्की खांसी और छींक आने पर भी टेंशन हो जाती है. बढ़ते मामलों को देखते हुए भारत सरकार की ओर से कई कदम उठाए जा रहे हैं. सरकार ने किसी भी तरह की अफवाह से बचने, खुद की सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश जारी किए हैं, जिससे कोरोना वायरस से निपटा जा सकता है.

ऐसे में कोरोना से डरने की नहीं बल्कि सतर्क रहते हुए पूरी ऐहतियात बरतने की जरूरत है. अगर आप नीचे दी गई कुछ बातों पर अमल करेंगे तो कोरोना के किसी भी संक्रमण से बहुत हद तक बचे रहेंगे.

जानें- क्या करें और क्या न करें?

१-सोसायटी के पार्क, जिम या अह्डिटोरियम में न जाएं. अगर आप सोसायटी, मोहल्ले या कॉलोनी में रहते हैं तो वहां के पार्क, जिम या कह्मन एरिया आदि में जाने से बचें.

२-सार्वजनिक वाहनों का उपयोग न करें. लाकडाउन में ट्रेन, बस, मेट्रो आदि सब बंद हैं. फिर भी बेहद जरूरी हो तो भी सार्वजनिक वाहनों का उपयोग न करे. आपको ये नहीं पता कि आपकी सीट कहीं कोरोना संक्रमित तो नहीं.

३-सार्वजनिक सभाओं में न जाएं. आप किसी भी समुदाय, दल की सभा या पार्टी वगैरह में जाने से परहेज करें. हो सकता है कि आप जिस सार्वजनिक सभा, जलसे, पार्टी या कार्यक्रम में गए हों. वहां कोई कोरोना संक्रमित हो.

४-शापिंग माल्स, सिनेमा आदि न जाएं. लाकडाउन हटने के बाद भी अगले कुछ हफ्तों तक ऐसी जगहों पर सोशल डिस्टेंसिंग का ख्याल रखें.

५-अस्पताल में सतर्क रहें. अगर आपका कोई करीबी अस्पताल में है और आपको उसके पास रहना है तो खुद को अच्छे से ढक लें. मास्क लगाएं. सैनिटाइजर से लगातार हाथ साफ करते रहें. अस्पताल के स्टाफ के निर्देश मानें और मरीज से ५ फीट की दूरी से मिलें.

६-रेस्टोरेंट में खाने से परहेज करें. खुलें है तब भी सोशल डिस्टेंसिंग का खास ख्याल रखते हुए खाना खाएं. क्योंकि हो सकता है कि वहां कुक, वेटर या अन्य गेस्ट को कोरोना हो और उसके लक्षण न दिख रहे हों.

७-सार्वजनिक शौचालयों का उपयोग न करें. माल्स, सड़क, बाजारों में बनाए गए सार्वजनिक मुफ्त शौचालयों का उपयोग न करें, क्योंकि उनके दरवाजों, हैंडल और नलों की इतनी अच्छी सफाई नहीं होती जितनी होनी चाहिए.

८-अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता का ख्याल रखें. साबुन से लगातार हाथ धोते रहें. छींकने और खांसने के दौरान अपना मुंह जरूर ढंकें. जब आपके हाथ स्पष्ट रूप से गंदे न हो, तब भी अपने हाथों को हैंड वाश से जरूर धोएं. प्रयोग के बाद टिशु को तुरंत किसी बंद डिब्बे में फेंक दें.

९-डाक्टर के संपर्क में रहे. अस्वस्थ होने पर डाक्टर से मिलें. एक दूसरे से दूरी बनाए रखें. अपनी आंखों, नाक और मुंह को छूने से बचें. बुखार-खांसी-सांस लेने में तकलीफ हो तो डाक्टर से तुरंत संपर्क करें या सरकारी हेल्पलाइन पर फोन करें.

१०-सभ्य बनें. सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें. कहीं भी टिशु न फेंके. कच्चे-अधपके मांस के सेवन से बचें. सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें.

११-बेवजह बाहर न जाएं. सरकार छूट दे तब भी फिलहाल बेवजह बाहर न जाएं. लाकडाउन के दौरान भी जरूरी

चीजों की खरीदारी के लिए भी सप्ताह में एक बार ही बाहर निकलें. बच्चों को बाहर न लाएं. संभव हो तो अकेले ही जाएं.

१२-बुजुर्गों का ध्यान रखें. कोरोना वायरस बुजुर्गों को आसानी से अपना शिकार बना रहा है. परिवार के बुजुर्गों का खास ख्याल रखें. उन्हें घर में ही रखें और सुरक्षित रखें. उन्हें व्यस्त रखें ताकि घर में उन्हें बोरियत या अकेलापन महसूस न हो.

१३-लिफ्ट-सीढ़ियों पर सावधान रहें. लिफ्ट के बटन और सीढ़ियों की रेलिंग कुछ ऐसी जगह हैं जहां कोरोना संक्रमण हो सकता है. लिफ्ट के बटन दबाने के लिए अपने पास हमेषा टूथपिक रखें. एक टूथपिक का एक ही बार इस्तेमाल कर उसे कूड़े मे फेंक दें. सीढ़ियां चढ़ते या उतरते समय भी रेलिंग को पकड़ने से बचें.

१४-बाहर से सामान मंगाने पर उसे सैनिटाइज करें. अगर आप बाहर न निकलते हुए कुछ आनलाइन मंगाते हैं तो सामान आने पर उसे सैनिटाइज जरूर करें. जिस कागज या प्लास्टिक में सामान डिलीवर हुआ है उसे तुरंत हटाकर फेंक दें. सामान की डिलीवरी लेकर अपने हाथ साबुन या सैनिटाइजर से धोएं. अगर आपने बाहर से खाना आर्डर किया है तब भी डिलीवरी लेते वक्त सावधानी रखिए.

१५-बाहर से सब्जी लाने पर धो लें. अगर आप बाजार से सब्जी लाए हैं तो उसे गुनगने पानी से धो लें. दूध की थैली लाने पर उसे भी गर्मपानी में डाला जा सकता है. अगर कोई सामान तुरंत इस्तेमाल नहीं करना है तो उसे घर में लाकर एक सुरक्षित जगह रख दें जहां बच्चों की पहुंच न हो. कुछ दिन बाद उसका इस्तेमाल करें ताकि संभावित संक्रमण खत्म हो जाए.

संपादक

1996 ls =sekfld ,oa 2001 ls ekfld ds :i esa fujUrj izdkf'kr dy] vkt vkSj dy Hkh cgqi;ksxh

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक

एक प्रति–15 / रुपये, वार्षिक–150 / रुपये,

पंचवर्षीय–750 / रुपये, आजीवन–1500 / रुपये, संरक्षकः 11000 / रुपये

[kkrk /kkjd– विश्व स्नेह समाज, cSd dk uke: विजया बैंक, [kkrk la[;k–718200300000104, vkbZ,Q,llh dksM–वीजेबी0007182 सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पताः एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949, ई–मेलः vsnehsamaj@rediffmail.com

स्वर्ग–नरक

शास्त्रों में निपुण, प्रसिद्ध ज्ञानी एवं प्रख्यात संत श्री देवाचार्य के शिष्य का नाम महेन्द्रनाथ था. एक शाम महेन्द्रनाथ अपने साथियों के साथ उद्यान में टहल रहे थे. और आपस में वे किसी विषय पर चर्चा कर रहे थे. चर्चा का विषय था–स्वर्ग–नरक. किसी एक साथी ने महेन्द्रनाथ से पूछा– ''क्यों मित्र! क्या मैं स्वर्ग जाऊंगा?''

महेन्द्रनाथ ने उत्तर देते हुए कहा–''जब मैं जायेगा, तभी आप स्वर्ग जाओगे.''उसके मित्र ने सोचा कि महेन्द्रनाथ को अभिमान हो गया है और सारे मित्रों ने मिलकर महेन्द्रनाथ की शिकायत अपने गुरु श्री देवाचार्य से कर दी।

गुरुदेव को पता था कि उनका शिष्य महेन्द्रनाथ न केवल निरहंकारी है बल्कि अल्प शब्दों में गंभीर ज्ञान की बातें बोलने वाला है। उन्होंने महेन्द्रनाथ को बुलाकर इस घटना के बारे में पूछा, और उसने अपना सिर हिलाकर इस बात की पुष्टि की। अन्य शिष्यों में इस घटना को देखने के बाद कानाफूसी शुरू हो गयी। श्री देवाचार्य ने मुस्कुराते हुए दोबारा वही प्रश्न पूछा– ''अच्छा ये बताओ महेन्द्रनाथ! क्या तुम स्वर्ग जाओगे?'' महेन्द्रनाथ ने कहा– ''गुरुदेव! जब मैं जायेगा, तभी तो मैं स्वर्ग जा पाउँगा। ''

श्री देवाचार्य शिष्यों को समझाते हुए बोले– ''शिष्यों, इनके कहने का मतलब है जब ''मैं'' जाएगा यानि जब अहंकार जायेगा, तभी तो हम स्वर्ग के अधिकारी बन पाएंगे। जब–जब आपके मन में ये बातें आएंगी कि मैंने ऐसा किया, मैंने इतने पुण्य किये, मैंने सब किया। उस स्थिति में स्वर्ग के बारे में सोचना भी गलत है।

हिन्दी में शोध का धंधा

शोधार्थी और निर्देशक दोनों का लक्ष्य जल्दी से जल्दी शोध बिना श्रम के उपाधि प्राप्त करना है.

शोध कार्यों को अंजाम देने वाले सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन किसी विश्वविद्यालय में शिक्षक नहीं, आई. सी.एस. अधिकारी थे.

हिन्दी जगत में शोध के नाम पर जमा किए जाने वाले ज्यादातर प्रबंध या तो कुछ पुस्तकों से उतारे गए उद्धरण या निजी स्वार्थ की सिद्धि के लिए ऊंचे पदों पर आसीन आचार्यों या साहित्यकारों के गुणगान.

-डॉ० अमरनाथ

(लेखक कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर और हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं।)

शोध की उपाधि को नौकरी से जोड़ना आधुनिक भारत की एक दुर्घटना है. इसकी शुरुआत 1 जनवरी 1986 से हुई जब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों के लिए नए वेतनमान की घोषणा की और उसी के साथ पी-एच.डी. उपाधिधारी शिक्षकों को तीन अतिरिक्त वेतनवृद्धि की अनुशंसा की. पी-एच.डी की उपाधि को वेतनवृद्धि, नौकरियों तथा शिक्षकों की पदोन्नति से जोड़कर यूजीसी ने शोधकार्य को महत्व देने का प्रयास तो किया किन्तु उसकी गुणवत्ता बनाए रखने के लिए समुचित दिशा-निर्देश नहीं दिया.

शोधार्थी को आज किसी भी तरह पी-एच.डी. की उपाधि चाहिए क्योंकि बिना उसके नौकरी मिलनी कठिन है और शोध-निर्देशक को भी अपने प्रमोशन में अधिक से अधिक शोध-प्रबंधों के निर्देशन का अनुभव चाहिए. इस तरह शोधार्थी और शोध-निर्देशक दोनो का लक्ष्य जल्दी से जल्दी शोध की उपाधि प्राप्त करना है. शोध की गुणवत्ता उनकी प्राथमिकता नहीं है. इसीलिए आज दोनों ने ही श्रम से पल्ला झाड़ लिया है.

यू.जी.सी. के रेगुलेशन 2018, भाग-3, खण्ड-4 के संख्या 3.10 के अनुसार 1 जुलाई 2021 से देश के विश्वविद्यालयों में शिक्षक बनने के लिए निर्धारित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) की अनिवार्यता समाप्त हो जाएगी और पी.एच.डी. की उपाधि मात्र ही पर्याप्त योग्यता मान ली जाएगी. आज जहां विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के चयन के लिए यूपीएससी जैसे संगठन की जरूरत है वहां 'नेट' को भी निष्प्रभावी बना देना प्रमाणित करता है कि शीर्ष पर नीति निर्धारण के लिए किस तरह के लोग विराजमान हैं. मैं यह नहीं कहता कि 'नेट' की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सभी में आदर्श शिक्षक की पात्रता होती है, किन्तु जिन्होंने किसी राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की है उनकी तुलना में 'नेट' उत्तीर्ण करने वालों से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की ही जानी चाहिए.

सच तो यह है कि सभ्यता के विकास में अबतक जो कुछ भी हमने अर्जित किया है वह सब अनुसंधान की देन है और जिज्ञासु मनुष्य, साधनों के अभाव में भी अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति के कारण अनुसंधान से जुड़ा रहता है. जेम्सवाट ने किसी प्रयोगशाला में पता नहीं लगाया था कि भाप में शक्ति होती है. उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति ने अभावों में भी उन्हें इतने बड़े सत्य के उद्‌घाटन के लिए विवश कर दिया.

हिन्दी में अनुसंधान की नींव भी विदेशी जिज्ञासुओं ने ही अपने व्यक्तिगत प्रयास से रखी थी. उनमें जे.एन. कारपेन्टर ने लंदन विश्वविद्यालय से उपाधि सापेक्ष अनुसंधानकार्य किया और उनका विषय था 'थियोलाजी ऑफ तुलसीदास'. इस शोधकार्य पर उन्हें 1918 ई. में शोध उपाधि प्राप्त हुई.

हिन्दी अनुसंधान के विकास में राष्ट्रीय और बौद्धिक जागरण का महत्वपूर्ण योगदान है जिसके कारण भारत के बौद्धिक समुदाय में अपनी अस्मिता के प्रति जागरुकता का संचार हुआ. इससे साहित्य तथा ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में नई चेतना का संचार हुआ. इन घटनाओं से बंगाल का समाज सबसे ज्यादा और सबसे पहले प्रभावित हुआ जिसे हम बंगला नवजागरण के रूप में जानते हैं.

भारतेन्दु और उनके मंडल के लेखक निरंतर बंगाल के संपर्क में रहे. इन सबके परिणामस्वरूप हिन्दी भाषी क्षेत्रों के बुद्धिजीवी भी हिन्दी साहित्य की समृद्ध परंपरा के अनुसंधान की ओर प्रवृत्त हुए. इस अनुसंधान कार्य में विदेशियों ने भी पर्याप्त भूमिका निभाई. 'लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया' तथा 'माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ नार्दर्न हिन्दुस्तान' जैसे शोध कार्यों को अंजाम देने वाले सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन किसी विश्वविद्यालय में शिक्षक नहीं, आई.सी.एस. अधिकारी थे.

अनुसंधानपरक आलोचना का व्यवस्थित रूप द्विवेदी युग में सामने आया. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कृत 'नैषधचरित चर्चा' में अनुसंधानपरक समीक्षा का उन्नत स्वरूप ढलता हुआ दिखायी देता है. 1913 ई. में भारत के विभिन्न स्थानों में विश्वविद्यालय खोलने का प्रस्ताव पारित हुआ और देश के प्रमुख शहरों जैसे लखनऊ, आगरा, नागपुर आदि में विश्वविद्यालय खुलने लगे. कलकत्ता विश्वविद्यालय तो सबसे पहले अर्थात् 1857 में ही खुल चुका था और हिन्दी में एम.ए. की पढ़ाई भी होने लगी थी किन्तु अनुसंधान कार्य बहुत बाद में आरंभ हुआ. अनुसंधानपरक आलोचना में अनुपलब्ध तथ्यों का अन्वेषण और उपलब्ध तथ्यों का नवीन आख्यान होता है. इसलिए यह कार्य कोई भी व्यक्ति किसी संस्था से जुड़कर आसानी से कर सकता है. किसी संस्था से जुड़े बिना अनुसंधान कार्य करना कठिन होता है. इसीलिए विश्वविद्यालयों के खुलने के बाद आरंभिक दिनों में अनुसंधापरक आलोचना के क्षेत्र में तेजी से विकास हुआ.

प्रतिष्ठानिक आधार पर भारत में हुए अनुसंधान-कार्य की परंपरा के विकास में 1931 ई. महत्वपूर्ण है. इसी वर्ष प्रयाग विश्वविद्यालय से बाबूराम सक्सेना को उनके 'अवधी का विकास' अनुसंधान कार्य पर डी.लिट्. की उपाधि मिली. 1934 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल को 'दि निर्गुण स्कूल आफ हिन्दी पोयट्री' पर डी.लिट्. की उपाधि मिली. भारत में हिन्दी भाषा पर भाषा वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य से भाषानुसंधान परंपरा का आरंभ हुआ और कुछ वर्ष के भीतर ही साहित्य के विभिन्न पक्षों पर अनुसंधान कार्य सामने आने लगे और इस तरह अनुसंधान के विषयों में तेजी से विस्तार होने लगा. इसी अवधि में स्वैच्छिक साहित्यिक संस्थाओं की प्रकाशन योजना में, उनकी सहायता से वैयक्तिक स्तर पर हो रहे अनुसंधान-कार्य भी सामने आने लगे. इस तरह हिन्दी में अनुसंधान-कार्य का अतीत बहुत ही उज्ज्वल दिखाई देता है किन्तु जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है जबसे शोध की उपाधि को नौकरी और पदोन्नति से जोड़ा गया, शोध का अवमूल्यन शुरू हो गया.

वैश्वीकरण के बाद अनुसंधान के क्षेत्र में और भी तेजी से गिरावट आई है. हमारे देश की पहली श्रेणी की प्रतिभाएं मोटी रकम कमाने के चक्कर में मैनेजर, डाक्टर और इंजीनियर बनना चाहती हैं. किसी ट्रेडिशनल विषय में पोस्टग्रेजुएट करके शोध करना उन्हें नहीं भाता. जो डाक्टर या इंजीनियर नहीं बन पाते वे ही अब मजबूरी में शोध का क्षेत्र चुन रहे हैं. वैश्वीकरण और बाजारवाद ने नयी प्रतिभाओं का चरित्र ही बदल दिया है. अब 'सादा जीवन उच्च्व विचार' का आदर्श बेवकूफी का सूचक है. ऐसे कठिन समय में त्यागपूर्ण जीवन का आदर्श चुनना आसान नहीं है. उत्कृष्ट शोध में यह आदर्श अनिवार्य है.

यद्यपि देश भर के विश्वविद्यालयों और निष्ठावान शोध- निर्देशकों में इस विषय को लेकर भयंकर असंतोष है, पर प्रतिक्रियाएं बहुत कम देखने को मिलती हैं. देश भर की शिक्षण संस्थाओं और शोध-केन्द्रों में साहित्य की विभिन्न विधाओं पर प्रायः सेमीनार-संगोष्ठियाँ आयोजित होती रहती हैं, किन्तु शोध जैसे अनिवार्य और महत्वपूर्ण विषय की समस्याओं पर केन्द्रित किसी संगोष्ठी के आयोजन की सूचना कभी-कभी ही मिलती है.

हिन्दी जगत की दशा तो यह है कि शोध के नाम पर जमा किए जाने वाले ज्यादातर प्रबंध या तो दस बीस पुस्तकों से उतारे गए उद्धरणों के असंबद्ध समूह या निजी स्वार्थ की सिद्धि के लिए ऊंचे पदों पर आसीन आचार्यों या साहित्यकारों के गुणगान. गुणवत्ता की कसौटी पर खरा उतरने वाले प्रबंध यदा-कदा ही देखने को मिलते हैं. आखिर क्या कारण है कि शोध के लिए आधुनिक साहित्य ही आजकल शोधार्थियों और निर्देशको को अधिक आकर्षित कर रहा है? और उसमें भी जीवित और रचनाकर्म में रत रचनाकारों पर धड़ल्ले से शोध कार्य सम्पन्न हो रहे हैं. जबकि राजस्थान के जैन मन्दिरों तथा प्राच्य विद्या संस्थान की शाखाओं, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता, एशियाटिक सोसाइटी कोलकाता आदि में हस्तलिखित ग्रंथों का अम्बार लगा हुआ है जो अनुसंधुत्सुओं की प्रतीक्षा कर रहा है. बहुभाषा भाषी इस विशाल देश की विभिन्न भाषा-भाषी जनता के बीच सांस्कृतिक व भावात्मक संबंध जोड़ने के लिए तुलनात्मक साहित्य में शोध

की असीम संभावनाएं व अपेक्षाएं हैं. लोक साहित्य, भाषा विज्ञान, साहित्येतिहास आदि के क्षेत्र में शोध की महती आवश्यकता है.

मेरे कहने का यह तात्पर्य हर्गिज नहीं है कि हमारे आज के साहित्य पर शोधकार्य नहीं होना चाहिए. आज के साहित्य, समाज और राजनीति को समझे बगैर हम अपने अतीत के साहित्य, समाज, राजनीति और इतिहास का वस्तुनिष्ठ मूल्याँकन कर ही नहीं सकते. किन्तु आज के साहित्य पर शोध करने और कराने वालों के इरादे तो नेक होने ही चाहिए.

शोध के गिरते स्तर का इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि आज अधिकाँश प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में बहुतेरे शोध छात्र ऐसे लेखकों पर शोधरत हैं जिनके लेखन में अभी असीम संभावनाएं हैं. किसी भी बड़े लेखक की विचारधारा में लगातार परिवर्तन होता रहता है. लेखक जड़ नहीं होता और अध्ययन-चिन्तन- मनन के क्रम में उसकी अवधारणाओं के बदलते रहने की प्रचुर संभावनाएं होती है. इसलिए शोध जैसा गंभीर कार्य उसी साहित्यकार पर होना चाहिए जिसका लेखन या तो पूरा हो चुका हो या पूरा होने के कगार पर हो. तात्पर्य यह कि उसमें अब किसी परिवर्तन की या नया जुड़ने की संभावना न हो क्योंकि किसी साहित्यकार पर शोध करने का अर्थ है उसके ऊपर एक थीसिस या सिद्धांत दे देना और उसपर शोध उपाधि प्राप्त कर लेना. ऐसी दशा में यदि किसी शोधार्थी ने किसी जीवित और सृजनरत रचनाकार पर शोध कार्य पूरा करके उसपर एक थीसिस दे दिया और बाद में वह लेखक अपनी किसी नयी कृति में एक नई और पहले से भिन्न विचारधारा प्रस्तुत कर दी तो पहले के किए हुए शोध-कार्य का क्या होगा? क्योंकि अब तो उस व्यक्ति की विचारध ाारा पहले वाली नहीं रही.

इतना ही नहीं, आज हिन्दी में शोध-कार्य की दशा यह है कि बिना जे. आर.एफ. (जूनियर रिसर्च फेलोशिप) किए शोध में पंजीकरण बहुत कठिन है. शोध के स्तर को बनाये रखने के लिये यूजीसी समय-समय पर नियमों में तरह-तरह के संशोधन करता रहता है. उन्ही में से एक यह भी है कि अब एक आचार्य स्तर का शोध-निर्देशक भी एक साथ आठ से अधिक शोधार्थियों को शोध नहीं करा सकता. इतना ही नहीं, विश्वविद्यालयों को शोध के लिए खाली हुई रिक्तियों के लिये परीक्षाएं लेनी पड़ती हैं. इन सबका प्रभाव यह हुआ है कि शोध के लिए जगहें बहुत कम हो गई हैं और जे. आर.एफ. पाने वालों के भी पंजीकरण अब मुश्किल से हो रहें हैं. अब हिन्दी में फल-फूल रहे इस गोरख-धंधे पर विचार कीजिए कि एक जे.आर.एफ. पाने वाला शोधार्थी पाँच वर्ष तक के लिए पंजीकृत होता है और इस अवधि में उसे लगभग 18–20 लाख रूपए शोध-वृत्ति के रूप में मिलते हैं और उसका शोध-निर्देशक उससे अपने किसी प्रिय या आदरणीय लेखक के व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध के नाम पर अभिनंदन ग्रंथ लिखवाता है और पी-एच. डी. की डिग्री भी दिलवाता है, ताकि उससे भी वह अपने बारे में प्रशस्ति या पुरस्कार आदि का जुगाड़ कर सके.

इधर जब से शोध को उपाधि से जोड़ा गया और उपाधि को नौकरी से, तब से ऐसी शोध-पत्रिकाएं भी बड़ी संख्या में निकलने लगी हैं जहाँ शोध-पत्र, गुणवत्ता के आधार पर कम, 'अर्थ' के बल पर अधिक प्रकाशित होते हैं.

शोध में तटस्थता अनिवार्य है. क्या किसी जीवित और समर्थ रचनाकार पर शोध करने वाला व्यक्ति उसकी कमियों को रेखांकित करने का साहस कर सकेगा? मेरे संज्ञान में ऐसे अनेक पंजीकृत शोधार्थी हैं जो इस तरह से सरकार से धन लेकर अपने शोध-निर्देशकों के मित्रों अथवा शुभचिन्तकों का जीवनवृत्त रच रहे हैं. आम तौर पर सुनने को मिलता है कि अब विश्वविद्यालय विद्वानों से खाली होते जा रहे हैं. पहले जैसी स्थिति नहीं रही. मुझे भी लगता है कि विश्वविद्यालयों में नियुक्ति के लिए शोध उपाधि जब जरूरी नहीं थी तबके नियुक्त शिक्षकों नें उच्च कोटि के शोध-कार्य भी किए और अध्यापन भी. हमारे कलकत्ता विश्वविद्यालय की पहचान जिन अध्यापकों के नाते है उनमें से प्रमुख दो-प्रो.कल्याणमल लोढ़ा तथा प्रो. विष्णुकान्त शास्त्री, पी.एच. डी. नहीं थे. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एम.ए. हिन्दी का पाठ्यक्रम बनाने वाले आचार्य रामचंद्र शुक्ल बी.ए. पास भी नहीं थे.

आज की दशा यह है कि औसत दर्जे के लेखक भी अपना परिचय लिखते समय यह उल्लेख करना नहीं भूलते कि उनकी रचनाओं पर किन-किन विश्वविद्यालयों में शोध हो चुके हैं या हो रहे हैं. अब यह भी उनकी योग्यता का एक पैमाना मान लिया गया है. किन्तु चरम पतन का दौर तो अब आने वाला है, 1.07.2021 से. जब बिना 'नेट' पास किए ही अपने बाहुबल से पी-एच.डी की उपाधि हासिल कर विश्वविद्यालयों में शोध.

-ईई-164/402, सेक्टर-2, साल्टलेक, कोलकाता-700091

भारतीय संस्कृति और आधुनिक महिला चिंतन

-डॉ० अर्पण जैन 'अविचल'

संसार का सार्वभौमिक नियम है परिवर्तन और इसी परिवर्तन के कारण ही संसार संचालित भी है. दशकों पहले जब मनोरंजन के संसाधन सीमित थे तब न तो टेलीविजन था न ही अन्य कोई संसाधन, तब नुक्कड़ नाटकों, मैदानों में होने वाली रामलीला, मेले, हास्य मंच व कवि सम्मेलनों की दुनिया भी जीवित और स्वीकार्य थी. धीरे-धीरे बदलाव आते गए, सिनेमा और टेलीविजन का दौर आया, फिर छोटे पर्दे की धमक हुई. इसी से मनोरंजन के साधनों में बदलाव आने लगे. गोष्ठियों और सम्मेलनों की हिस्सेदारी फिर भी बनी रही, और यशस्वी भी हुई. किन्तु वर्तमान युग अब इंटरनेट युगीन हो रहा है. समय की अपनी मर्यादाएँ भी हैं और पसंद-नापसंद का अपना चक्कर. ऐसे दौर में नए जमाने ने फिल्मों और शार्ट फिल्मों ने भी वेब सीरीज में अपना अस्तिव बनाना आरम्भ कर लिया है.

वर्तमान में कोरोना संकट से समूची मानवजाति संकट में है, और अर्थव्यवस्था की तो बात ही करना खतरा है. ऐसे दौर में मनोरंजन, राष्ट्र जागरण, गीत-संगीत और हास्य के लिए आयोजित होने वाले कवि सम्मलेनों पर भी संकट आना स्वाभाविक है. क्योंकि यह व्यवस्थाएँ प्रायोजक आदि पर निर्भर करती हैं और अभी देशबन्दी के बाद प्रायोजकों का मुख्य ध्यान तो स्वयं की आर्थिक कमर मजबूत करने पर होगा, विज्ञापन आदि के खर्चों में कटौती होना स्वाभाविक है. तब ऐसे समय में वो क्या करेंगे जो केवल कविता या कवि सम्मेलनों पर ही आश्रित होकर अपना जीवन यापन कर रहे हैं! कविता और कवि सम्मेलन या छोटे स्वरूप में कहें तो काव्य गोष्ठियाँ ये न तो मिटेंगी न ही कमजोर होंगी. सच तो यह है कि कवि सम्मेलन का अपना स्तर होता है और वह प्रायोजक पर निर्भर करता है. संकट और देशबन्दी के हालात में निश्चित तौर पर अभी कुछ माह तो संकट रहेगा. फिर बाजार के स्वस्थ और सुचारू होते वह भी पटरी पर आ जायेगा.

सच तो यह है कि कवि सम्मेलन का अपना स्तर होता है और वह प्रायोजक पर निर्भर करता है. संकट और देशबन्दी के हालात में निश्चित तौर पर अभी कुछ माह तो संकट रहेगा. फिर बाजार के स्वस्थ और सुचारू होते वह भी पटरी पर आ जायेगा.

इसी बीच कवियों को यूट्यूब, फेसबुक एवं स्वयं की वेबसाइट के माध्यम से ऑनलाइन काव्य रसिक श्रोताओं तक अपनी ऊर्जावान रचनाएँ उपलब्ध करवानी चाहिए. इससे दो फायदे होंगे, एक तो यूट्यूब, गूगल इत्यादि से विज्ञापन प्राप्त होंगे और आय का स्त्रोत बनेगा, दूसरा प्रसिद्धि मिलेगी, नए श्रोता मिलेंगे, जो निश्चित तौर पर हालात सामान्य होने पर और आपको पसंद करने के चलते कवि सम्मेलन में सुनना चाहेंगे. यह भी व्यावसायिक दृष्टिकोण से लाभकारी है.

साथ ही निकट भविष्य में छोटे पर्दे के साथ-साथ वेब सीरीज जैसे नेटफ्लिक्स, हेशफ्लिक्स, अल्ट बालाजी, अमेजान प्राइम जैसे अनेकोनेक प्लेटफार्म पर भी कवियों के लिए विशेष कार्यक्रम बनेंगे जो आय के स्त्रोत के रूप में उभरेंगे. वैसे वेब सीरीज का भी अपना अलग मिजाज है, उस पर व्यक्तिशः पसंद-नापसंद के मापदंडों और घटकों-सामग्रियों (कंटेंट) की गुणवत्ता के आधार पर आर्थिक लाभ में कम -ज्यादा होना चलता रहता है.

निकट भविष्य में वेब सीरीज का दौर आने वाला है. लोग 250 से 300 रुपये महीना केबल आपरेटर को देने की बजाए ओटीटी (ओवर दी टाप) आनलाइन स्ट्रीमिंग वेबसाइट्स प्लेटफार्म वालों को सालाना सब्सक्रिप्शन खर्च देना पसंद कर रहे हैं और यह लोगों की पहली पसंद बन भी गई है. ऐसे नए दौर में कवि सम्मेलनों को भी ओटीटी प्लेटफार्म पर आने में देर नहीं लगेगी. यह भी कवि सम्मेलनों का भविष्य कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं है.

भारत में ओटीटी प्लेटफार्म की दस्तक के साथ ही भारत की वीडियो स्ट्रीमिंग इंडस्ट्री इस दौर में अब तेज रफ्तार के साथ आगे बढ़ रही है. यानी दर्शकों की पहुँच में सुलभ मनोरंजन का माध यम है ओटीटी प्लेटफार्म.

'ओवर-द-टॉप' (ओटीटी) मीडिया सेवाएँ मूल रूप से आनलाइन सामग्री प्रदाता हैं जो स्ट्रीमिंग मीडिया को केवल उत्पाद के रूप में वितरित करती हैं. इसे वीडियो-आन-डिमांड प्लेटफार्म के रूप में भी समझा जा सकता है. भारत समेत दुनिया भर में ओटीटी प्लेटफार्म दर्शकों के बीच अपनी खा जगह बना रहे हैं, लेकिन यही प्लेटफार्म मीडिया के पारंपरिक माध्यमों को कड़ी टक्कर दे रहे हैं. भारत में ओटीटी प्लेटफार्म के पास बड़ा यूजर बेस है और इन प्लेटफार्म पर किसी भी समय अपना मन-पसंद कंटेन्ट देख पाना ही दर्शकों को और करीब लेकर आ रहा है.

भारत में नेटफ्लिक्स और वाल्ट डिज्नी (हाटस्टार)अपने कंटेन्ट विस्तार के लिए कई मिलियन डालर का निवेश कर रहे हैं. इन सभी ओटीटी दिग्गज भारत जैसे बड़े बाजार में अपनी जगह सुनिश्चित करना चाहते हैं. इनके अलावा जी५, आल्ट बालाजी, अमेजन प्राइम, टीवीएफ जैसे घरेलू प्लेटफार्म भी घरेलू दर्शकों को रिझाने के लिए रणनीति के साथ आगे बढ़ रहे हैं. ये सभी प्लेटफार्म क्षेत्रीय भाषाओं में कटेंट का निर्माण कर रहे हैं और घरेलू प्लेटफार्म पर सब्स्क्रिप्शन भी औसतन सस्ता है.

भारत की वीडियो स्ट्रीमिंग इंडस्ट्री अब तेज रफ्तार के साथ आगे बढ़ने के लिए तैयार है. बीते साल प्रकाशित हुई एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में वीडियो स्ट्रीमिंग इंडस्ट्री 21.82 प्रतिशत की रफ्तार के साथ साल 2023 तक 11 हजार 977 करोड़ रुपये की इंडस्ट्री बन जाएगी. आज उपभोक्ता स्मार्ट उपकरणों की एक विस्तृत श्रृंखला के माध्यम से अपने स्वयं के मीडिया की खपत को नियंत्रित कर सकते हैं और ओटीटी सेवाओं का उपयोग करके चौनलों को लेकर अपने व्यक्तिगत चयन को सुनियोजित कर सकते हैं. ऐसे दौर में कवियों को भी अपने घटकों (कंटेंट) की गुणवत्ता को निखार कर इस दिशा में आगे आना चाहिए, ताकि इस अवसर का लाभ उठाने में कवियों की यह तकनीकी समृद्ध पीढ़ी पीछे क्यों रहें।

-हिन्दीग्राम, इन्दौर, म.प्र.
09406653005

इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति का हिंदी में आदेश

हिंदी भाषा को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण निर्देश

यदि नाम देवनागरीमें लिखे तो पढ़नेमे कोई भूल नही होती परन्तु रोमनमें लिखा हो तो पता नही चलता कि उच्चारण क्या करना है।

इसी बातपर यह उच्च्व न्यायालयका फैसला ----इलाहाबाद हाईकोर्ट ने हिंदी में आदेश देकर हिंदी भाषा को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा कि माध्यमिक शिक्षा परिषद यानी यूपी बोर्ड २०२० व भविष्य की परीक्षाओं के अंकपत्र में अंग्रेजी के साथ हिंदी देवनागरी भाषा में नाम लिखे। यह भी कहा है कि इसके लिए जरूरी होने पर नियमों में संशोधन किया जाए। कोर्ट ने यह आदेश अंग्रेजी के नामों की स्पेलिंग दो तरीके से लिखी होने के कारण दिया है। ज्ञात हो कि यूपी बोर्ड के अंक व प्रमाणपत्रों में नाम की स्पेलिंग दुरुस्त करने के हजारों प्रकरण हर वर्ष सामने आते हैं, इसके लिए अभ्यर्थियों को धन, समय खर्च करना पड़ता है। कोर्ट ने याची के हाईस्कूल व इंटरमीडिएट के अंकपत्रों के नाम की स्पेलिंग दुरुस्त करने का भी निर्देश दिया है।

यह आदेश न्यायमूर्ति अशोक कुमार ने वाराणसी क्षेत्रीय कार्यालय परिक्षेत्र के मनीष द्विवेदी की याचिका पर दिया है।

याचिका पर राज्य सरकार के अधिवक्ता राहुल मालवीय ने सरकार का पक्ष रखा। हिंदी भाषा में सुनाए गए फैसले में कहा कि भारतीय संविधान में राजभाषा देवनागरी हिंदी में सरकारी कामकाज करने की व्यवस्था दी गई है। हिंदी को पूर्ण रूप से स्थापित होने तक १५ वर्षों तक अंग्रेजी भाषा में कामकाज की छूट दी गई थी, जिसे आज तक जारी रखा गया है। कोर्ट ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए राजभाषा नीति के तहत हिंदी में सरकारी काम करने पर भी बल दिया है। याची के नाम की स्पेलिंग में अंतर होने पर सुधार की मांग की गई थी, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया है।

सबको उड़ जाना है एक दिन, तस्वीर से रंगो की तरह, हम वक्त् की टहनी पर बैठे है इन परिंदों की तरह.....

ललित निबन्ध

'आशा'

(एक स्त्री मन का तार्किक चिन्तन)

-कृष्ण कुमार 'कनक'

बड़ी ही विकट परिस्थिति में हूँ, यानी कि किंकर्तव्यविमूढ़. न भाव है और न भाषा-बोध. लिखूँ तो क्या लिखूँ...? आशा भी कितनी अजीब है न....माँ की बच्चों के प्रति और बच्चों की पिता के प्रति.....यानी यूँ कहिए कि टकटकी सीधी जेब पर...पापा ये दिला दो...पापा वो दिला दो... और दीपावाली आ रही हो तो कर्मचारी की मालिक की ओर... इस बार का बोनस... किन्तु बेरोजगार यह जानते हुए भी कि इस बार भी कुछ नहीं होना फिर भी सरकार से आशा लगाए ही रहता है...और कर भी क्या सक्ता है...? खैर छोड़िए इन सब बातों में क्या. .! आशा जब शिक्षक की अपने विद्यार्थी से हो तब क्या कहिए? निःसंदेह विश्वास की पराकाष्ठा पर कुठाराघात होता होगा जब शिक्षक की आशा पर विद्यार्थी खरे न उतरते होंगे.

आशा जब टूटती होगी तो मानो पाषाण-शिला खण्ड-खण्ड...हिमाद्रि द्रवित...सागर में सुनामी और मरुभूमि में मृगमरीचिका. आशाओं के एक अद्वितीय शिलालेख को इन नयनों ने शून्य में विलीन होते प्रत्यक्ष निहारा है. आशाओं के निर्मल आकाश को अश्रु बिन्दु सरीखा निर्झर होते...आलोक पर्व के विद्युत वेग की विभा को निमिष मात्र में अदृश्य होते...चपला सी चंचलता, संसार भर की पीड़ा को अपनी जानकर स्व-स्फुटित होती मौलिकता और अनीति के तृण-मात्र के प्रति भी आक्रोश की घोर गर्जना को मध्यम-मध्यम मन्द होकर सदा के लिए शांत होते.मैंने ही तो देखा था.

वे मेरे जनक, मेरे अजन्मे सपनों के प्रणेता, काल की गति से हारे तो असाध्य-वीणा सा मेरा जीवन अन्धकार को थमाकर मौन के लोक में जा बैठे ....उन अस्थियों के साथ ही मेरी आशाओं के न जाने कितने स्वर्ण कुसुम गंगा की धारा में बहते रहे.... ...मैं कल्पना की दृष्टि से ही अवाक् खड़ी उस प्रवाह को अपने नेत्रों के पटल पर उतारती रही.

वे मेरे जनक, मेरे अजन्मे सपनों के प्रणेता, काल की गति से हारे तो असाध्य-वीणा सा मेरा जीवन अन्धकार को थमाकर मौन के लोक में जा बैठे...उन अस्थियों के साथ ही मेरी आशाओं के न जाने कितने स्वर्ण कुसुम गंगा की धारा में बहते रहे....मैं कल्पना की दृष्टि से ही अवाक् खड़ी उस प्रवाह को अपने नेत्रों के पटल पर उतारती रही.

वे अकेले ही तो गए थे...संसार के प्रत्येक जीवधारी की भाँति.. ईश्वर की बनाई रचना के नियमों के अनुरूप.. और पीछे छूट गयी थी माँ की माँग की रिक्त पड़ी सिन्दूर रेखा, सूनी कलाई, बिछुओं से विहीन पाद-पंखुरियाँ, हास विरक्त हृदय, विरही मन, भाई का भोला बचपन और मेरा प्रणय-शून्य यौवन.

जिन हाथों में कलम थमाकर प्रथम बार विद्या के मन्दिर में बिठाते हुए आशाओं का जाल बुना होगा, वे उन्हीं हाथों को अनन्त भार सौंप गये. मेरी आशाओं का क्या? जीवन अब स्वयं ही भार सा प्रतीत होने लगा है. किन्तु जीवन की आशा पुनः बलवती हो उठती है जब 'नीरज' का गीत सुनती हूँ...'छिप-छिप अश्रु बहाने वालो, मोती व्यर्थ लुटाने वालो, कुछ सपनों के मर जाने से, जीवन नहीं मरा करता है.'

आशा का नव अंकुर पल्लवित हो उठता है जब कोई स्वर साम्राज्ञी 'लता' सुप्रसिद्ध कवि 'इन्दीवर' के गीत को अपना स्वर देकर गुनगुनाती है...छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए, ये मुनासिब नहीं आदमी के लिए। प्यार से भी जरूरी कई काम हैं, प्यार सब कुछ नहीं जिंदगी के लिए।'

आशा और फिर आशा...इधर टूटी तो उधर नवीन कानन की उर्वरा मृदा में किसी नव कोंपल का रूप धारण कर मानो पीछे पीछे टहलने लगती है. जो टूट चुकी हो अब उसके सहारे से भी तो नहीं रहा जा सकता...... हरिवंशराय बच्चन जी ने लिखा 'जीवन में एक सितारा था, माना वह बेहद प्यारा था, वह डूब गया तो डूब गया, अम्बर के आनन को देखो, कितने इसके तारे टूटे, कितने इसके प्यारे छूटे, जो छूट गए फिर कहाँ मिले, पर बोलो टूटे तारों पर, कब अम्बर शोक मनाता है, जो बीत गई सो बात गई.

' यूँ ही किसी टूटती आशा रूपी नदी के किनारे को बिखरने से रोकने के उद्देश्य से गिरधर कवि ने लिखा होगा 'बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेइ.' नित्य नवीन आशा के भावों को अपना जीवन-साथी बनाकर निश्छल व्योम में विचण करते हुए एक कवि ने यूँ भी लिखा...'अधरों की मुस्कान छीनकर अपना महल बसाने वाले, तेरा ये उपकार कि मेरा जीवन और निखार दिया है।'

बारहवीं कक्षा में अपने हिन्दी के अध्यापक से एक कहानी सुनी थी 'लाइफ इज ए ग्लोरियस गिफ्ट आफ गाड' अर्थात जीवन ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक शानदार उपहार है. कई बार तो ये लगता है कि यह कथन कम से कम मेरे संदर्भ में तो उचित मालूम नहीं होता किन्तु दूसरे ही क्षण अनुभव होता है कि यही सत्य है जिसे स्वीकार कर निरंतर आगे बढ़ने का विचार ही श्रेष्ठ है.

सुख और दुःख एक दूसरे के पूरक हैं. यदि दुःख न रहे तो सुख की कल्पना कैसी? एक का अस्तित्व तभी है जब दूसरा अस्तित्व में हो. अतः मेरा मानना है कि दुःख में धैर्य रखना बड़ी चुनौती है जो एक कठिन कार्य तो है किन्तु भविष्य के दीर्घकालिक सुख का प्रवेश द्वार है. आशा के भग्नावशेष में ही नवीन आशा का अनुपम वातायन विकसित होने को तैयार है। बस आवश्यकता है तो सिर्फ धैर्य की.

एक बात और भी है कि आशाओं को अनावश्यक किसी पर थोपना भी उचित नहीं.... यदि आशा टूटी तो निराशा का कोप सहन करने की सामर्थ्य का संचय भी पूर्व में ही कर लेने की आवश्यकता होती है किन्तु आज का मानव इस विचार से अनभिज्ञ केवल अपनी मनोवृत्ति का ही शिकार होता रहता है. तदनन्तर टूटती आशाएँ उसके स्वयं को ही धिक्कारने हेतु विवश होती हैं.

एक व्यापारी आशा करता है कि उसे कोई ठगने न पाये किन्तु वह स्वयं दूसरो को ठगने का विचार बनाता रहता है, लाभ कमाने हेतु मिलावटखोर भी आशा करता है कि उसे कोई वस्तु मिलावट युक्त न मिले, सरकारी कर्मचारी काम पर ध्यान देने की बजाय वेतन -वृद्धि की आशा में सदैव सरकार को चाँद मानकर चकोर बना रहता है. एक भाई आशा करता है कि उसकी बहन की ओर किसी की दृष्टि की छाया भी न पहुँच सके किन्तु वह स्वयं किसी चौराहे पर पूरे दिन छाया रहता है। तब मैं सोचने पर विवश हो जाती हूँ कि क्या इन लोगों की आशाओं को पूरा हो जाना चाहिए....? यह प्रश्न मेरे लिए तो छोटे मुँह बड़ी बात जैसा है. बातों ही बातों में मैं कुछ ज्यादा ही बोल गयी.

खैर बात बस इतनी सी थी कि इस वर्ष हमारे महाविद्यालय की पत्रिका में मेरा लेख छपे ऐसी आशा मेरी शिक्षिकाओं की है. मैं संस्कृत विषय से परास्नातक उत्तरार्ध की छात्रा हूँ तो इसका अर्थ यह हुआ कि यह मेरा महाविद्यालय में अन्तिम वर्ष है अतः यह भाव मेरा भी है कि पत्रिका में मेरा भी लेख छपे, यानी कि पत्रिका के रूप में मैं अपने महाविद्यालय में बिताए पाँच वर्षो की एक अनुभूति सदैव अपने साथ रख सकूँ.....तब तो कुछ लिखना ही होगा, परन्तु लिखूँ क्या? अपनी टूटती आशाओं का असीम आकाश या अपनी शिक्षिकाओं की सागर सरीखी अथाह आशा का विश्वास. ...क्योंकि मेरे पास न तो भाव हैं और न भाषा का बोध.....।

-प्रबन्ध-सचिव, प्रज्ञा हिन्दी सेवार्थ संस्थान ट्रस्ट, फिरोजाबाद, उ.प्र.

आवश्यक सूचना

लाक-4 प्रश्नोत्तरी का पंजीकरण 10.06.2020 से प्रारम्भ हो गया है. जिसमें प्रतिभाग करने वाले को अपना नाम, जिला, राज्य का नाम, एक फोटो के साथ सहभागिता हेतु 9335155949 पर ह्वाट्सएप करना होगा. पंजीकरण 18.06.2020 की रात्रि 12 बजे तक होगा. प्रतियोगिता 21.06.2020 से प्रारंभ होगी. प्रतियोगिता के बीच में भी पंजीकरण होगें लेकिन उन प्रतिभागियों का जिनका उत्तर पांच दिनों में कम से कम तीन दिन सर्वप्रथम दस में स्थान मिला होगा. लेकिन बिना पंजीकरण के प्रतिभागी नहीं माने जाएगे.

पिता

कन्धे पर झोला लटकाए,
खाना व पानी लिये,
देख सकते
दौड़ते-भागते पकड़ते
लोकल ट्रेन, बसें।
लटते-लटकाते,
लोगों की दुतकार खाते,
कभी घंटे भर का तो कभी
घंटों का सफर करते।
ढूंढते पैनी नजरों से,
कहीं मिल जायक हाथ भर
बैठने की जगह,
मिल गई तो वाह-वाह,
वरना खड़े-खड़े करते,
पूर्ण वर्श ये सफर।
पहुँच दफतर, निबटाते काम,
खाते ठंडा खाना, पीते गर्म पानी,
बचाते पाई-पाई।
लौटते अंधेरे मुँह घर,
कल फिर से आने की
आषा लिये।
अक्सर घर से जाते-आते,
सोए मिलते बच्चे,
थकी दिखती पत्नि।
ये कोई और नहीं,
पिता है, पिता है,
जिन्हें अपनी नहीं
परिवार की फिक्र है।

-**शबनम शर्मा**, सिरमौर, हि.प्र.

माँ

माँ जब मैं मिलने आऊंगी
मुझको गले लगा लेना।
उलझे हुए मेरे बालों को
तुम पहले सुलझा देना।।

जाने कितने दिनों से अम्मा,
प्यारी नींद नहीं आई।
भूल गई हूं थपकी, लोरी
अम्मा जो तुमने गाई।
अम्मा पहले तनिक बिठा कर
सर मेरा सहला देना।
उलझे हुए मेरे बालों को
तुम पहले सुलझा देना।।

पांवों के माँ नूपुर टूटे,
दिन भर दौड़ लगाने में।
हाथों की सुधि खोयी अम्मा,
सबका स्वाद बनाने में।।
रुनझुन वाला नूपुर हमको,
अम्मा फिर पहना देना।
अम्मा पहले तनिक बिठा कर,
मेरा सर सहला देना।

नटखट मांग करूं जब अम्मा,
चंदा को बुलवाने की।
जिद कर लूंगी फिर से अम्मा,
जिद अपनी मनवाने की।
गोदी में ले अम्मा हमको,
फिर से तुम बहला देना।
अम्मा पहले तनिक बिठा कर,
सर मेरा सहला देना।

फिर से हमको गुड़िया वाली,
लाल ओढ़निया ला देना।
फिर से गुड्डा, गुड़िया वाला,
अम्मा ब्याह रचा देना।
लोरी के संग हमें सुलाकर,
मां हमको फुसला देना।
अम्मा पहले तनिक बिठा कर,
मेरा सर सहला देना।

-श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', रायबरेली, उ.प्र.

विदाई

सोच के बेटी की विदाई,
देखो कैसी आँखें आई।
अभी जैसे कल ही लगता है,
हमारे आँगन खुशियाँ बन के आई।
देखो समय का खेल,
बनी आज हमारे लिए पराई।
बचपन से अब तक थी
हमारे घर की मान-सम्मान।
अब बनेगी दूसरे घर की शान,
बढ़ाएगी उस घर की मान।
सच कहते हैं लोग,
बेटी होती है पराया धन।
पर इस सच्चाई को
अपनाने से कतराता है मन।
आज समझ आया बिदाई का एहसास,
नासमझ मैं न समझ पाई बिदाई का एहसास।

उम्मीद का फरिश्ता

आज वर्षों बाद उम्मीद की किरण
आईं फैलाने खुशियाँ मेरे घर-आँगन।
जीवन के हर मोड़ पर हो हताश,
खत्म न होगी सुखी जीवन की तलाश।
न सोचा दुःख के बादल छँट जाएँगे,
साँसों की डोर एक दिन टूट जाएँगी।
लगा सबकुछ बिखर गया,
सपनों को जोड़ना मुश्किल हो गया।

वर्षों बाद उम्मीद ने जिन्दगी में दस्तक दी,
एक फरिश्ते ने मुझे हिम्मत दी।
कहा-हिम्मत न हरोय न करो गम।
खुशियाँ दे रहीं हैं तुम्हें दस्तक,
कर लो पूरी अपनी चाहत।
है उस फरिश्ते का साथ
नहीं घबराती मैं अब आज।
जीतने का साहस मैं जुटा पाई,
बिखरे सपने आज समेट पाई।
आशीर्वाद ईश्वर का और फरिश्ते का साथ,
वर्षों बाद ले रही हूँ चौन की साँस।
हे! उम्मीद के फरिश्ते
मत छोड़ना मेरा साथ।

-अनुपमा प्रधान
शिक्षिका, आर्मी पब्लिक
स्कूल,शिलांग, मेघालय,

कोरोना के छक्के

लॉकआउट में कभी रहे ना इसीलिए बेचैन बहुत है।
नहीं समझते लॉकआउट में रहने में ही चैन बहुत है।
रहने में ही चैन बहुत है जिसने इसको समझ लिया है।
कोरोना से उसने सचमुच आज स्वयम् को बचा लिया है।
कह हितेष कविराय लांघना लक्ष्मण रेखा उचित नहीं है।
जाने कहाँ छिपा है षत्रु और हमें यह विदित नहीं है।

छुपकर वार कोरोना करता है भैया यह सत्य जान लो।
बहुत सूक्ष्म है नहीं दिखाई देगा तुमको बात मान लो।
बात मान लो आत्मनियंत्रण से ही इससे बच सकते हो।
अगर उतावलापन कर बैठोगे तो प्यारे फंस सकते हो।
कह हितेष कविराय खरीदने कुछ भी मत जाओ बाहर से।
घर में ही संतुश्ट रहो तुम कुछ भी मत लाओ बाहर से।

रोज रोज की टोकाटाकी से तुम बुरा मान मत जाना।
षुभचिन्तक हूँ प्रिय तुम्हारा अर्थ अन्यथा नहीं लगाना।
अर्थ अन्यथा नहीं लगाना बात भले की है यह भैया।
कुछ दिन और किनारे पर ही रहने दो तुम मन की नैया।
कह हितेष कविराय अभी यह समय क्रूर बीत जाने दो।
फिर हम सब हरिद्वार चलेंगे कोरोना व्यतीत जाने दो।

मन में अभी सजोकर रखना क्या करना कैसे करना है।
अभी मुख्य संदेष यही है हमें कोरोना से बचना है।
हमें कोरोना से बचना है सकल विष्व की यह चिन्ता है।
लॉकआउट में रहकर सन्ता बचा फंसा बाहर बन्ता है।
कह हितेष कविराय देष का रहबर निषदिन जाग रहा है।
और तुम्हारे लिए कामना षुभ ईष्वर से मांग रहा है।

-हितेश कुमार शर्मा
गणपति भवन सिविल लाईन बिजनौर २४६७०१ उ०प्र०

सोशल मीडिया से

मैं गाँव हूँ!

मैं वहीं गाँव हूँ, जिसपर यह आरोप है कि यहाँ रहोगे तो भूखे मर जाओगे। मैं वहीं गाँव हूँ, जिसपर आरोप है कि यहाँ अशिक्षा रहती है.

मैं वहीं गाँव हूँ, जिसपर असभ्य, जाहिल और गवाँर होने का भी आरोप है.

हाँ, मैं वही गाँव हूँ, जिस पर आरोप लगाकर मेरे ही बच्चे मुझे छोड़कर दूर बड़े-बड़े शहरों में चले गए.

जब मेरे बच्चे मुझे छोड़कर जाते हैं मैं रात भर सिसक सिसक कर रोता हूँ, फिर भी मरा नही. मन में एक आस लिए आज भी निर्निमेष पलकों से बाट जोहता हूँ. शायद मेरे बच्चे आ जायँ, देखने की ललक में सोता भी नहीं हूँ। लेकिन हाय! जो जहाँ गया वहीं का हो गया.

मैं पूछना चाहता हूँ अपने उन सभी बच्चों से, क्या मेरी इस दुर्दशा के जिम्मेदार तुम नहीं हो?

अरे! मैंने तो तुम्हे कमाने के लिए शहर भेजा था, और तुम मुझे छोड़ शहर के ही हो गए. मेरा हक कहाँ है?

क्या तुम्हारी कमाई से मुझे घर, मकान,बड़ा स्कूल, कालेज, इन्स्टीट्यूट, अस्पताल आदि बनाने का अधिकार नहीं है? ये अधिकार मात्र शहर को ही क्यों? जब सारी कमाई शहर में दे दे रहे हो तो मैं कहाँ जाऊँ? मुझे मेरा हक क्यों नहीं मिलता?

इस कोरोना संकट में सारे मजदूर गाँव भाग रहे हैं, गाड़ी नहीं तो सैकड़ों मील पैदल बीबी बच्चों के साथ चल दिए, आखिर क्यों? जो लोग यह कहकर मुझे छोड़ शहर चले गए थे कि गाँव में रहेंगे तो भूख से मर जाएंगे, वो किस आस-विस्वास पर पैदल ही गाँव लौटने लगे? मुझे तो लगता है निश्चित रूप से उन्हें यह विस्वास है कि गाँव पहुँच जाएंगे तो जिन्दगी बच जाएगी, भर पेट भोजन मिल जाएगा, परिवार बच जाएगा. सच तो यही है कि गाँव कभी किसी को भूख से नहीं मारता. हाँ मेरे लाल आ जाओ, मैं तुम्हें भूख से नहीं मरने दूँगा.

आओ, मुझे फिर से सजाओ, मेरी गोद में फिर से चौपाल लगाओ, मेरे आंगन में चाक के पहिए घुमाओ, मेरे खेतों में अनाज उगाओ, खलिहानों में बैठकर आल्हा गाओ, खुद भी खाओ, दुनिया को खिलाओ, महुआ, पलास के पत्तों को बीनकर पत्तल बनाओ, गोपाल बनो, मेरे नदी ताल तलैया, बाग,बगीचे गुलजार करो, बच्चू बाबा की पीस-पीस कर प्यार भरी गालियाँ, रामजनम काका के उटपटांग डायलाग, पंडिताइन की अपनेपन वाली खीज और पिटाई, दशरथ साहू की आटे की मिठाई, हजामत और मोची की दुकान, भड़भूजे की सोंधी महक, लईया, चना, कचरी, हो रहा,बूट, खेसारी सब आज भी तुम्हे पुकार रहे हैं.

मुझे पता है, वे तो आ जाएंगे जिन्हे मुझसे प्यार है लेकिन वे? वे क्यों आएँगे जो शहर की चकाचौंध में विलीन हो गए. वहीं घर मकान बना लिए, सारे पर्व, त्यौहार, संस्कार वहीं से करते हैं। मुझे बुलाना तो दूर, पूछते तक नहीं। लगता है, अब मेरा उनपर कोई अधिकार ही नहीं बचा? अरे, अधिक नहीं तो कम से कम होली दिवाली में ही आ जाते तो दर्द कम होता मेरा. सारे संस्कारों पर तो मेरा अधिकार होता है न, कम से कम मुण्डन, जनेऊ, शादी और अन्त्येष्टि तो मेरी गोद में कर लेते. मैं इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि यह केवल मेरी इच्छा है, यह मेरी आवश्यकता भी है. मेरे गरीब बच्चे जो रोजी रोटी की तलाश में मुझसे दूर चले जाते हैं, उन्हें यहीं रोजगार मिल जाएगा, फिर कोई महामारी आने पर उन्हें सैकड़ों मील पैदल नहीं भागना पड़ेगा. मैं आत्मनिर्भर बनना चाहता हूँ. मैं अपने बच्चों को शहरों की अपेक्षा उत्तम शिक्षित और संस्कारित कर सकता हूँ, मैं बहुतों को यहीं रोजी रोटी भी दे सकता हूँ. मैं तनाव भी कम करने का कारगर उपाय हूँ. मैं प्रकृति के गोद में जीने का प्रबन्ध कर सकता हूँ. मैं सब कुछ कर सकता हूँ मेरे लाल! बस तू समय-समय पर आया कर मेरे पास, अपने बीबी बच्चों को मेरी गोद में डाल कर. निश्चिंत हो जा, दुनिया की कृत्रिमता को त्याग दे. फ्रिज का नहीं घड़े का पानी पी, त्यौहारों, समारोहों में पत्तलों में खाने और कुल्हड़ों में पीने की आदत डाल, अपने मोची के जूते, और दर्जी के सिले कपड़े पर इतराने की आदत डाल, हलवाई की मिठाई, खेतों की हरी सब्जियाँ, फल-फूल, गाय का दूध, बैलों की खेती पर विश्वास रख. कभी संकट में नहीं पड़ेगा. हमेशा खुशहाल जिन्दगी चाहता है तो मेरे लाल, मेरी गोद में आकर कुछ दिन खेल लिया कर. तू भी खुश और मैं भी खुश.

लेखक का नाम ज्ञात नहीं। (व्हाट्सऐप संदेश का माध्यम से प्राप्त एक भावनात्मक अच्छी रचना)

सुनो सुनो सुनो!

&Mk- e¥t jh ik.M;

मेरा घर मुझसे ज्यादा अन्य लोगों का है. फाख्ता, आस्ट्रेलियन पक्षी, गौरैया आदि. पक्षिराज मयूर यदा कदा दौरे पर आते हैं. उनका स्थाई आवास यहाँ नही है. लेकिन सारनाथ मे उनका स्थायी वास होने के कारण विचरते हुए छत पर आते जाते रहते हैं. अनेक देशी विदेशी विभिन्न प्रजातियों के पक्षी तो प्रतिदिन छत पर पानी रखती हूँ वो पीने आते हैं. परन्तु गौरैया कई वर्षों से रह रही है. छत की सीलिंग में जहाँ से बिजली वायरिंग के तार गए हैं उसमें घुस कर पहले आवास बनाया. वहाँ उनका परिवार बढ़ा. दिनोंदिन बढता ही जा रहा है, क्योंकि उन पर परिवार नियोजन की कोई बन्दिश तो लागू है नही. लिहाजा फल फूल रही हैं. कई बार उस बिलनुमा घोंसले से गिर कर कुछ अण्डे फूट जाते थे. वो गौरैया के स्वतः आने जाने से नीचे आ जाते और गिर जाते. अण्डे ना गिरें इसके लिये हमने दफ्ती वाला आधा कटा कार्टून उस बिल के नीचे लटकवा दिया. जिससे ऊपर से अण्डे जमीन पर न गिरें. देखते देखते उन लोगों ने सूखे घास फूस तिनकों से उसे भी भर दिया. उसमें भी घोंसला बना लिया. यह उनके घर का विस्तार हुआ. जैसे दो मंजिला घर बन गया. ये नया ओपन घोंसला तैयार. इस पर बैठ कर वो झूले का भी आनन्द लेती हैं. मस्ती से कई गौरैयाँ उस पर बैठ कर झूलती है. मै उनकी भाषा तो नही समझती पर उनकी प्रसन्नता और मस्ती देख कर लगता वो झूल झूल कर गीत गा रही हैं. हो सकता है सावन में कजरी वगैरह कुछ गाती हों. नीचे मेरे कमरे से इनकी पूरी दिनचर्या दिखती है. भोजन लाना बच्चों को खिलाना. भोजन के लिये छोटे छोटे बच्चों का चीं चीं करते हुए मुँह खोलना. गौरैया का चोंच में चोंच डाल कर बच्चों को खाना खिलाना. पहले भोजन पाने की होड़ में किसी किसी बच्चे का नीचे तक लुढ़क आना. कभी कभार तो बिना रोएँ वाला एकाध बच्चा जमीन पर गिर जाता. उसे उठा के एकाध बार हमने घोंसले के पास रख दिया तो फिर जैसे उसे गौरैया ने स्वीकार नही किया. परिणामस्वरूप वह चल बसा.

मै उनकी भाषा तो नही समझती पर उनकी प्रसन्नता और मस्ती देख कर लगता वो झूल झूल कर गीत गा रही हैं. हो सकता है सावन में कजरी वगैरह कुछ गाती हों. नीचे मेरे कमरे से इनकी पूरी दिनचर्या दिखती है.

तब से मै उसके बच्चे नही छूती न छूने देती हूँ. वह स्वतः चोंच में कस के उसे उठा ले जाती है. हाँ रामायण के सीताहरण की घटना लगता है उसे याद है. कैसे बँधी भिक्षा न लेने की बात कह कर रावण ने सीता मइया को लक्ष्मण रेखा से बाहर बुला कर अपहरण किया था.

अन्दर उसके घोंसले के आस-पास दाना पानी रख दूँ तो दिन भर पड़ा रह जाएगा नही चुगती. वही गेट के बाहर छींटते ही गौरैया, मैना चिड़ियों का झुण्ड उतर आता है. थोड़ी ही देर में समाप्त. आजकल नीचे कमरे में रह रही बहू ने गेट के सामने एक बाउण्ड्री वाल पर छोटा-छोटा सीमेन्टेड कटोरानुमा बना दिया है जिससे बर्तन गिरने पड़ने का डर नही. उसी में चावल दाल आदि के दाने डाल दिये जाते हैं. बड़े कसोरे में पानी उसे भी जाम कर दिया है. कई तरह की चिड़ियाँ, कबूतर, मैना, कौवा, तोता खाने पीने आते हैं. यही नही सामने एक कनस्तर भी बाँध कर रख दिया गया है. रोज उसमें पानी भरा जाता है. मुहल्ले के कुत्तों और उधर आने जाने, गुजरने वाले गाय बकरियों, साँड़ों आदि चौपायों के लिये. उन्हे भी पता है सो कहीं कुछ खा पी लें फिर पानी पीने यहीं आते हैं. इस तरह पशु पक्षियों के साथ दैनन्दिन जीवन चल रहा है.

एक वाकया बताउँ. मैं कुछ दिनों से ऊपर बने कमरे में रहने लगी हूँ. मेरे शयन कक्ष में रोशनदान में केवल ग्रिल लगा है. मैने दफ्ती के टुकड़े से उसे ढँकवा दिया. कुछ दिनों से मै देख रही थी कभी गौरैयाँ कभी कबूतर बाराम्दे से उस पर चोंच मारते रहते थे. मैं समझ गयी थी कि नये आशियाने की तलाश है. वैसे नियमित तौर पर मै दिन मे विद्यालय चली जाती पढ़ाने. छुट्टियों के दिन भरपूर नजारा देखती और कबूतर को भगाती रहती थी क्योंकि वो मुझे पसन्द नही. एक दिन मैं जब विद्यालय से लौटी. कक्ष खोलते ही देखा एक चिडा चिड़ी (नर मादा गौरैया) मेरे शयन कक्ष में सीलिंग पंखे पर पहले से ही विराजमान हैं. मुझे आश्चर्य हुआ ये आये कैसे? पर मैने जब भगाया तो उसी रोशनदान के ग्रिल से उड़ भागे. मुझे माजरा समझते देर न लगी कि

कई दिनों से चोंच मार कर दफ्ती खिसकाने की प्रक्रिया चल रही थी. मिशन मुकम्मल होते ही आज अन्दर आ गए. खैर साफ सफाई की.

अगले दिन पुनः मै आयी तो देखा आज तो बकायदा घोंसला ही बनाने की तय्यारी शुरू हो गई. लगभग बित्ते-बित्ते भर की नीम की कोमल टहनियाँ कुछ पंखे के डैनों पर और कुछ जमीन पर बिखरी पड़ी थीं. संभवतः पंखे के डैनों पर रखने का, घोंसला बनाने का प्रयास था. कुछ इसीलिये नीचे बिखरे पड़े थे. बाहर से लौटते ही यह सब देख कर वो भी षयन कक्ष में पहले तो गुस्सा ही आया. आते ही पहले सफाई जो करनी पड़ी.

अगले तीन चार दिनों के लिये मुझे विद्यालय के काम से दूसरी जगह जाना था. मै नीचे बहू को बोल गई कि शाम को एक बार देख लेना कमरे के हालात. क्योंकि मुझे लग गया था वो आज भी आएगी जरूर. शाम को उसने फोन पर बताया कि आज तो जरूरत से ज्यादा नीम की टहनियाँ वो ले आयीं ओर आपके बिस्तर वगैरह सब पर पूरे कमरे मे फैला दिया है. उसी दम कारपेन्टर को तुरन्त जाकर सब देखने और जाली लगाने के लिये फोन पर कहा. लौट के आने पर एकत्रित ढेर देखा तो आश्चर्य हुआ नन्ही सी जान दिन भर में इतनी नीम की टहनियाँ कैसे तोड़ीं और ले आयी होगी? इससे भी बडा आश्चर्य यह भी कि कोई घास तिनका नही केवल सिर्फ केवल नीम की टहनियाँ. कारपेन्टर से लेकर सबने कहा कि हम लोगों ने गाँव घर में बहुत गौरैयाँ देखी हैं पर नीम की एकाध टहनी भी नही दिखी. यहाँ तो सिर्फ और सिर्फ नीम की कोमल ताजी तोड़ी गईं टहनियाँ. इस घटना पर अब भी प्रश्नचिह्न लगा है.

इस घटना से मेरे मन में एक ख्याल आया कि लगता है इन गौरइयाओं ने अपने माननीय प्रधानमंत्री जी का 'स्वच्छता अभियान' पर भाषण सुन लिया हो अथवा 'मन की बात' सुनी हो जिससे इतना प्रभावित हो गई है. अपने आस पास का वातावरण पहले शुद्ध और पवित्र करने की यह पहल कर रही हैं. वाकई सराहनीय और अनुकरणीय है हम मनुष्यों के लिये.

इनकी मानवीय संवेदना का एक और उदाहरण बताऊँ. इनके झूलेनुमा घोंसले पर मैना दम्पति ने कब्जा कर लिया. ये बिचारी छोटी विरोध करने मे समर्थ नही हुई तो स्वयं बाहर हो गई.

इनकी मानवीय संवेदना का एक और उदाहरण बताऊँ. इनके झूलेनुमा घोंसले पर मैना दम्पति ने कब्जा कर लिया. ये बिचारी छोटी विरोध करने मे समर्थ नही हुई तो स्वयं बाहर हो गई. पर बाहर से निरन्तर आस पास बनी थी. हमलोगों की नजर पड़ी तो हम एक जबरदस्त दरबान की तरह पहरे पर लग गए. जैसे मैना आती हो हो हो हो कर के हम सब ऊपर से नीचे से चिल्ला चिल्ला कर उसे भगाने मे लग गए. जिससे पुनः गौरैयाँ अपने घर में वापस आएँ. मैना भी अड़ी रही जाने कब रात में तो अवश्य छिप कर आ जाती. दिन में हम निगरानी में रहने लगे. गौरैयाँ लोग सामने दाना तो चुगतीं पापी पेट का जो सवाल है पर कात्तर दृष्टि से कभी अपने आशियाने कभी मददगार हम लोगों की ओर देखती. करे भी क्या. बारिश में भींगने लगी. इधर उधर टहनियों के बीच झाड़ियों में शरण लेने लगी. पर आस पास ही बनी रहीं शायद हमसे भी उनकी उम्मीद बँधी थी कि हम मैना को भगाने के अपने मिशन में कामयाब हो जाएँगे. हुआ भी ऐसा उनका झूला घोंसला ही हमने हटा दिया. ऊपर बिजली वाले सर्किल में मैना घुस नही पा रही थी. गेट पर उसके बैठते ही हम लखेदने के लिये तैयार थे. लगा मैना पर आज के समाज का इतना असर था कि अपना घर बनाना नही. दूसरे का बना बनाया घर कब्जा कर लेना. पर बुरे का अन्त बुरा ही होता है. अन्ततः मैना को बेदखल होना पड़ा. डरते-डरते धीरे-धीरे तीन चार दिनों मे अपने पुराने घोंसले में गौरैया आने जाने लगी तो उसका झूला घोंसला भी यथावत् टाँग दिया गया. गौरैयाओं ने विपत्ति में धैर्य के साथ 'अच्छे दिन' की प्रतीक्षा की. वो दिन आया भी. फिर से उनकी मौज मस्ती देख कर हमलोगों के चेहरे पर विजयी मुस्कान थी. पर थोड़े ही दिन बाद अबकी बार एक फाख्ता उसके घोंसले में बैठी दिखी. हम उसे भी भगाने में जुट गए. मैने कहा उसका झूला घोंसला हटा दो अपने आप फाख्ता चली जाएगी. गौरैया तो बिजली के बाक्स वाले घर में घुस ही रही है. अभी ये भी कुछ दिन पहले जैसे रह रहीं थीं वैसे ही रहें. तब तक अवांछनीय पक्षियों का कब्जा, आक्रमण सब समाप्त हो जाएगा.

घोंसला उतारने के लिये जब बेटे को चढ़ाया तो उसने बताया उसमें दो अंडे हैं. समझते देर नही लगी कि फाख्ता अंडे ही देने आई थी. अब सारे-सारे दिन बैठी उसे सेती है. अब हमें उसके बच्चे निकलने, उड़ने तक की प्रतीक्षा

करनी होगी. पर एक बात गौर किया कि गौरैयाँ घर छोड़ कर भागीं नही और मादा फाख्ता अकेली ही बस अंडे सेती है उसके साथ नर नही है. जैसे मैना तो दम्पति आई थी. यह भी देखा एक ही समय में दोनो आती जाती बैठती हैं. मतलब दोनों के बीच कुछ समझौता हुआ है 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान' से भी वाकिफ और उसके अनुपालन में लगी है गौरैया. हालत गम्भीर देख तुरन्त अंडे देने के लिये मादा फाख्ता की मदद की. अपने आशियाने में उसे जगह दे दी. फाख्ता ने भी कुछ वायदा किया होगा कि बच्चे बड़े होते ही चली जाएगी. इसीलिये वहाँ अकेली रहती है. हालाँकि बाहर दूसरा फाख्ता संभवतः नर होगा. उसके साथ उड़ता बैठता दिखायी देता है. मैं सोचती हूँ क्या समझौता है. वैसे उम्मीद भी है फाख्ता बच्चे लेकर चली जाएगी, क्योंकि पिछली बार छत पर बनाया था घोंसला. अण्डे दिये फिर बच्चे लेकर उड़ गई. स्थायी नही रहती. मैने साफ सफाई के क्रम में उसके घोंसले समेत ऊपर सफाई करा दी. अभी उसे कोई जगह नही मिली होगी. तब गौरैया ने एक स्त्री की पीड़ा समझते हुए उसे शरण दी. मानो इस तरह यशस्वी प्रधानमंत्री जी तक यह बात पहुँचाना चाहती है कि हम पशु पक्षी भी आपके साथ हैं. 'सबका साथ सबका विकास' कर नव भारत के निर्माण में हम भी साथ हैं. मुझे भी आत्मिक तोष हो रहा है कि मैं गौरैया के 'मन की बात', समाज के लिये उसके अनुकरणीय प्रयास को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास कर रही हूँ.

अभी तीन चार दिन पहले एक नवागत मेहमान मेरे घर आया है 'कच्छप'. कहीं से चल कर अपने आप आ गया है. वन विभाग को खबर कर दिया गया है. उन्होने कहा आ के ले जाएँगे. उनके आने तक वो अपने ही पास है. उसका नामकरण लक्ष्मी किया है. बाहर चलने के लिये छोड़ने पर वह अपने आप घर में ही आ जाती है. खैर लक्ष्मी प्रकरण फिर कभी विस्तार से बताउँगी. अभी तो हम गौरैया से सीख लेने का संकल्प लें जो कहना चाह रही है 'सुनो सुनो सुनो! हम सब पशु पक्षी धारा ३७० हो या कोई मुद्दा अपने प्रधानमंत्री में विश्वास जगाएँ तथा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के निर्माण में संकल्पित हो लें. जय भारत.

-सा 14/70 एम. बरईपुर, सारनाथ
वाराणसी-221007

आवश्यक सूचना

1– लाक-1, 2, 3, प्रश्नोत्तरी के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले विजयी प्रतिभागियों की उत्तम विजेता का चयन प्रश्नोत्तरी दिनांक 16.06.2020 से 20.06.2020 तक चलेगी.

2– लाक-४ प्रश्नोत्तरी का पंजीकरण प्रारंभ है. इस प्रतियोगिता में लाक डाउन 01, 2 एवं 3 के प्रथम एवं द्वितीय स्थान पाने विजयी प्रतिभागी प्रतिभाग तो कर सकेंगे लेकिन प्रतिभागी नहीं माने जाएंगे.

3– लाक डाउन 1,2,3 एवं लाक डाउन 4, 5, 6 प्रश्नोत्तरी के उत्तम विजयी प्रतिभागियों का सवोत्तम विजयी प्रतिभागी के लिए चयन हेतु सितम्बर 2020 में प्रश्नोत्तरी होगा. इस प्रकार 14 सितम्बर को परिणाम की घोषणा के साथ लाक प्रतियोगिता २०२० का इतिश्री हो जाएगा.

4–लाक डाउन 1,2,3 एवं लाक डाउन 4, 5, 6 काव्य प्रतियोगिता के उत्तम विजयी प्रतिभागियों का सवोत्तम विजयी प्रतिभागी के लिए चयन हेतु सितम्बर 2020 में. इस प्रकार 14 सितम्बर को परिणाम की घोषणा के साथ लाक प्रतियोगिता 2020 का इतिश्री हो जाएगा.

कहानी

सुबह के सपने

-**सीताराम पाण्डेय**,
मुजफ्फरपुर, बिहार

ट्रेन ज्योंहि प्लेटफार्म पर रूकी विकास तेजी से उतरा और बाहर निकल कर देखा, कहीं कोई रिक्शा नहीं दिखाई पड़ा. सर्वत्र अंधकार. चारो ओर सन्नाटा, बिल्कुल खामोश रात्रि के करीब एक बजे, दो किलोमीटर की दूरी तय कर, विकास पैदल ही अपने घर पहुँच गया.

अराजकता के माहौल में इतनी रात को अकेले चलना ठीक नहीं है यदि आपको कहीं कुछ हो गया तो...मेरा क्या होगा..? प्रतीक्षारत पत्नी ने चिन्तित भाव से कहा.

..नहीं नहीं...? कुछ नहीं होगा..? चिन्ता मत करो मीना..! भगवान सबकी रक्षा करते हैं.

खाना ले आती हूँ?

नहीं? खाना खा चुका हूँ. यह कहते हुए विकास अपने शयनकक्ष में प्रवेश कर विछावन पर लेट गया. कुछ कालोपरान्त वह निन्द्राधीन होकर सपनों के संसार में संचरण करने लगा और देखा-

आज करीब संध्या सात बजे के आसपास शहर के सरैयागंज मुहल्ले में कुछ असामाजिक तत्वों ने एक मुसलमान को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया है, जिसकी प्रतिक्रियात्मक प्रभाव में आकर करीब तीन-चार सौ मुसलमानों का एक हुजूम हिन्दुओं पर हमला करने की नियत से अस्त्र-शस्त्र से लैस होकर उस मुहल्ले के मुख्य मौलवी मोहम्मद ताज आलम के निकट पहुँचा और उनसे कहा-आपको शायद यह मालूम ही होगा कि मनबढ़े हिन्दुओं ने आज गोली मारकर एक निर्दोश मुसलमान की हत्या कर दी है. अतः हमलोग भी तैयार होकर हिन्दुओं पर हमला कर उससे बदला लेने के लिए आये हैं. आपसे आग्रह है कि हम मुसलमानों का मार्ग-दर्शन कर हमें भरपूर सहयोग करे. मौलवी ताज आलम ने कहा कि- अपराधियों की कोई जाति नहीं होती, मित्रों...! भले वह हिन्दु-मुस्लिम-सिक्ख-इसाई आदि किसी जाति में जन्म क्यों न लिया हो..? ज्योंहि वह अपराध जगत में पैर बढ़ाता है, बस, उसकी एक जाति हो जाती है, 'अपराधी' की. इसके लिए पूरा हिन्दू-समाज दोषी नहीं हो सकता? तो फिर हमें पूरे हिन्दुओं पर हमला करने का क्या औचित्य है? हाँ हमदोनों कौम मिल-बैठकर उस हत्यारे का पता करें. जिसने हम दोनों जातियों के बीच दंगा कराने के साजिश रची है. हम सभी लोग मिलकर उसके नापाक मनसुवों को सफल होने से रोकने का प्रयास करे.

इस पर कुछ इस्लामी नौजवानों के उनके सुझावों पर आपत्ति जताते हुए कहा-हिन्दु लोग मुसलमानों के साथ नहीं देते हैं? और वे हिन्दू, हिन्दू अपराधियों का सरंक्षण भी देते हैं.

नहीं भाई! यहाँ ऐसा नहीं होता? अगर होता तो पुलिस विभाग में अधिकांश पदाधिकारी हिन्दू ही है. वे हिन्दू अपराधी को नहीं पकड़ते? लोग सभी विधानसभा के चुनाव के लिए कोई मुसलमान नेता यदि लड़ा तो क्या हिन्दुओं ने उन्हें वोट नहीं दिया? कई मुसलमान देश के राष्ट्रपति भी बने. तो क्या वे केवल मुसलमानों के वोट से ही बने? यह आपकी सोच कहीं से समीचीन नहीं है. क्योंकि मानवता और समन्वयकता की भव्य-भावनाएँ ही इस देश के उन्नत आदर्श हैं. मौलवी ने बड़े गर्वोन्नत भाव से कहा-

इसी बीच उस खूनी को पुलिस के हत्थें चढ़ने की कहीं से सूचना मिली. यह सुनकर मौलवी साहब इन दोनों कौम के बीच भ्रातृत्व-प्रेम को परवान चढ़ाने के लिए पुरजोर प्रयास करते हुए कहा-देख लिया न?...अभी-अभी खबर मिली है उस खूनी को हिन्दू पुलिस के द्वारा पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया गया है, तो कैसे कहा जा सकता है कि हिन्दुओं की ओर से हिन्दुत्व के नाम पर अपराधियों को संरक्षण दिया जाता है? अपनी प्रतिक्रियात्मक सोच और नासमझी के कारण ही हिन्दुओं को हम दुष्मन मान बैठते है और यह दुष्मनी कभी-कभी दंगा का रूप ले लेती है, जिसकी वजह से बेशुमार निर्दोष लोगों की जान चली जाती है. यह भयंकर मानवीय भूल है.

वहाँ उपस्थित मुसलमान बिल्कुल शान्त-भाव से मौलवी साहब की बात सुन रहे थे-

बन्धुओं...?

ये सब सामान्य अपराधी नहीं, बल्कि हमारे देश का कट्टर दुश्मन पाकिस्तान और चीन के एजेन्ट के रूप में कार्यरत है जो दुश्मनों के द्वारा दिये गये चाँदी के चंद सिक्कों के लोभ में देश के भीतर हत्या, अपहरण, बलात्कार, लूट आदि घटनाओं को अंजाम देकर साम्प्रदायिक दंगा फैलाने की साजिश रचते है और दुश्मन के बहकावे में आकर देश को कमजोर करना चाहते हैं. नसमझी, प्रतिक्रियात्मक सोच और अदूरदर्शिता के कारण ही बिहार से लेकर बंगाल और आसाम से लेकर

यू.पी. तक यदा-कदा जातीय दंगा होते रहें हैं. वह मुट्ठी भर देश का गद्दार अपने घर में ही ऐसी चाल चलता है कि सेन्टीमेंट में आकर बिना सोचे समझे हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे पर अक्रमण कर देते है, यह कितनी शर्मनाक बात कही जा सकती है?

मित्रों

यह भारत एक सुन्दर फुलवारी है और इसमें बसने वाले विभिन्न जातियाँ, भिन्न-भिन्न रंगों बाले पुष्प के रूप में परिदृष्य है. अतः हम सभी देशवासी. .हिन्दू हो या मुसलमान, सिक्ख हो या इसाई एक साथ मिलकर, उन मुट्ठी भर देश के गद्दारों को सबक सिखाने के लिए संकल्प लें, ताकि आज के बाद भारत के किसी कोने में जातीय दंगा का स्वर मुखरित नहीं हो.

मौलवी साहब के निष्पक्ष एवं सुन्दर सुझाव को सुनकर वहाँ उपस्थित सभी मुसलमान काफी संतुष्ट दिखाई पड़े. उनके हृदय में हिन्दुओं के प्रति इर्ष्या-आक्रोश की जगह भातृत्व-प्रेम की लहर-हिलोंरे मारने लगी. सभी ने एक स्वर में हिन्दु-मुस्लिम-एकता को मजबूत करने एवं देश में जातीय हिंसा नहीं होने देने का संकल्प लिया और उसके समर्थन में नारे भी लगाये-

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-इसाई
हम सब है आपस में भाई

विकास की नींद अचानक खुल गयी. देखा, सुबह के सात बज चुके हैं. बिस्तर से उठा और अपनी पत्नी से जाकर इस भयंकर सपने की बात बतायी. इस पर मीना ने अनमनस्क भाव से कहा-नींद में देखें गये सपने प्रायः सच नहीं होते..? दिन में जो कुछ व्यक्ति सोचता है, देखता है, सुनता है अथवा करता है, वहीं यदा-कदा निद्रावस्था में स्वप्न के रूप में भी देख लेता है. परन्तु नींद खुलते ही उन सपनों का अस्तित्व मिट जाता है. हाँ, उसकी याद जरूर रह जाती है. पढ़े-लिखे, बुद्धिमान लोग इन सब बातों पर विश्वास नहीं करते. छोड़ों इन बातों को लो...! चाय पीओ..! यह कहते हुए उसने मोहन के हाथों में चाय थमा कर भीतर चली गयी.

इसी बीच हॉकर ने विकास के हाथ में समाचार पत्र थमाकर चला गया.

सामाचार के मुख्य पृष्ठ पर लिखा था- ''साम्प्रदायिक दंगे की आग से यह शहर जलने से बाल-बाल बच गया.'' यह पढ़ते ही विकास दौड़कर अपनी पत्नी को दिखाते हुए बोला.. सुबह के सपने सच निकले मीना. ये देखों..! तब मीना ने कहा- तुमने ठीक ही कहा था ''सुबह के सपने प्रायः सच होते है'' रात बहुत बड़ा हादसा टल गया. नही तो यह शहर दंगों की आग से जलकर खाक हो जाता. भगवान की कृपा से ही यह संभव हुआ है.

वह बात भी तुम्हारी सच निकली मोहन! वास्तव में भगवान ही सबकी रक्षा करते हैं.

यह कहती हुई प्रसन्नता से पति के गले से लिपट कर राहत महसूस करने लगी.

आवश्यक सूचना

लाक-1, 2, 3, काव्य प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले विजयी प्रतिभागियों की उत्तम विजेता का चयन के लिए 16.06.2020 से 18.06. 2020 के बीच अपनी एक नई रचना आडियो (एम. पी3/वीडियों) में भेजनी होगी. वीडियो बनाते समय यह ध्यान रखना होगा. पीछे किसी संस्था का बैनर, पोस्टर न लगा हो. आडियो/वीडियों में सिर्फ अपना नाम, जिला, राज्य तथा रचना का शीर्षक ही रचना के अतिरिक्त बोलना होगा.

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।

vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

जीवन के बायोडाटा में सिर्फ आज को ही शुमार करें

-सीताराम गुप्ता

उर्दू शायर शकील शम्सी की एक ग़ज़ल का एक शेर है :

जो पा चुके हो उसे याद रखना काफ़ी है,
जो तुमने खो दिया उस को शुमार मत करना।

हमारे जीवन की विडंबना ये है कि हम इसके विपरीत आचरण करते हैं. जो हमारे पास होता है उसको महत्त्व देने की बजाय जो नहीं होता या जो नहीं रहता उसके लिए दुखी होते रहते हैं. जब हम नौकरी वग़ैरा के लिए अपना बायोडाटा तैयार करते हैं तो उसमें हम केवल अपनी शैक्षिक उपलब्धियों व प्राप्त अनुभवों का ही शुमार करते हैं अपनी अयोग्यताओं, असफलताओं अथवा कमज़ोरियों का नहीं. हम उन विषयों के नाम लिखते हैं जो हमने पढ़े हैं न कि उन विषयों के जो हमने पढ़े ही नहीं. हम कभी नहीं लिखते कि मैंने इतिहास में एमए नहीं किया या प्रबंधन में डिप्लोमा नहीं किया.

हम सामान लाने के लिए बाज़ार जाते हैं तो केवल उन वस्तुओं की सूची बनाकर ले जाते हैं जो हमें ख़रीद कर लानी होती हैं उन वस्तुओं की हरगिज नहीं जो नहीं लानी होती हैं. फिर जीवन के बायोडाटा में हम क्यों उन चीज़ों को शुमार करते हैं जो हमें मिल ही नहीं पाईं अथवा आज नहीं हैं? हमारे पास क्या हैं और हम क्या कर सकते हैं ये महत्त्वपूर्ण है न कि हमें क्या नहीं मिला और हम क्या नहीं कर सकते. यदि मैं अर्थशास्त्र पढ़ाता हूं तो इस बात को लेकर दुखी रहने का कोई अर्थ नहीं कि मैं गणित नहीं पढ़ा सकता. यदि ये छोटी-सी बात हमारी समझ में आ जाए तो जीवन की दिशा बदल जाए. हम बिना कारण मोल ली परेशानियों से बच जाएं.

जीवन में हमारी बहुत-सी ख़्वाहिशें होती हैं. उनमें से कुछ पूरी हो जाती हैं तो कुछ पूरी नहीं हो पातीं. प्रायः हमारी जो ख़्वाहिशें पूरी नहीं हो पातीं हमारा सारा ध्यान उन्हीं पर केंद्रित रहता है. हम बार-बार उन्हीं अभावों को लेकर दुखी होते रहते है. अभाव ही हमारी ज़िंदगी का चिंतन बन जाता है जो हमारे दुखों का सबसे बड़ा कारण है. आकर्षण के नियम के अनुसार अभावों के चिंतन का सबसे बड़ा दुष्परिणाम ये होता है कि अभावों का चिंतन करने वाला सदैव अभावग्रस्त बना रहता है. दुख अथवा अभावों के विचार दुख व अभावों को आमंत्रित करते हैं तो प्रसन्नता अथवा समृद्धि के विचार प्रसन्नता व समृद्धि को. हमारे लिए यही श्रेयस्कर होगा कि हम अपना ध्यान प्रसन्नता व समृद्धि अथवा जीवन में जो मिला है केवल उस पर केंद्रित करें.

हमारी अनेक उपलब्धियाँ भी होती हैं. हमने अभावों के बावजूद हार नहीं मानी है और ईमानदारी से आगे बढ़ने का प्रयास करते रहे हैं. हम बोर्ड या यूनिवर्सिटी के टॉपर न सही लेकिन हमने भी स्कूल-कॉलेजों में उतना ही वक़्त दिया है जितना टॉपर्स ने दिया है. हमारे प्रयास और कर्म महत्त्वपूर्ण हैं न कि परिणाम. उद्देश्य महत्त्वपूर्ण होते हैं न कि कमाई. जीवन में मानसिक संतुष्टि अत्यंत महत्त्वपूर्ण है मात्र भौतिक जगत की उपलब्धियाँ नहीं. यदि हम वर्तमान उपलब्धियों अथवा आर्थिक स्थिति से प्रसन्न नहीं हैं तो जीवन में और भी बहुत सारी चीज़ें मिल जातीं तो भी क्या गारंटी है कि हम सुखी हो ही जाते? ख़्वाहिशों का कोई अंत नहीं होता लेकिन ये हक़ीक़त हम नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि अभावों के बावजूद हमें जीवन में बहुत कुछ मिला होता है.

यदि हम ध्यान दें तो हमारे प्रसन्न रहने के भी हमेशा अनेक कारण विद्यमान रहते हैं. हमारा एक अच्छा परिवार है. उसमें नन्हें बच्चों की किलकारियां गूंजती रहती हैं. माता-पिता अब भी बहुत प्यार करते हैं. बच्चे सुशील और आज्ञाकारी हैं तथा हमारी हर इच्छा को पूरी करने के लिए तत्पर रहते हैं. हमारे मित्र और दूसरे परिचित हमारा बड़ा ध्यान रखते हैं. हमारे घर के पास एक बहुत सुंदर और विशाल पार्क है. अब ये हमारे ऊपर है कि हम जीवन भर अभावों का रोना रोते

हम सामान लाने के लिए बाज़ार जाते हैं तो केवल उन वस्तुओं की सूची बनाकर ले जाते हैं जो हमें ख़रीद कर लानी होती हैं उन वस्तुओं की हरगिज नहीं जो नहीं लानी होती हैं. फिर जीवन के बायोडाटा में हम क्यों उन चीज़ों को शुमार करते हैं जो हमें मिल ही नहीं पाईं अथवा आज नहीं हैं?

रहें अथवा छोटी-छोटी जो अनेक खुशियां उपलब्ध हैं उनको लेकर प्रसन्न होते रहें. सिर्फ अभावों पर ध्यान केंद्रित करना वैसे भी ठीक नहीं क्योंकि हम जिन विचारों पर ध्यान केंद्रित करते हैं वही विचार न केवल हमारी मानसिकता को प्रभावित करते हैं अपितु जीवन की वास्तविकता में भी परिवर्तित हो जाते हैं.

वैसे भी यदि हमारे पास विशाल प्रासादनुमा बंगला नहीं है तो क्या रहने के लिए एक साधारण-सा घर तो है. आने-जाने के लिए मोटरगाड़ी न सही एक साइकिल तो है. कई लोगों के पास न तो सर छुपाने के लिए छत ही होती है और न ठीक से दो वक़्त की रोटी जुगाड़ ही. क्या हम अनेक लोगों से हर तरह से बेहतर नहीं हैं? क्या ये हमारी वर्तमान संतुष्टि के लिए पर्याप्त नहीं? हम और अच्छा घर बनाने या आर्थिक स्थिति को और सुदृढ़ करने का प्रयास करें लेकिन वर्तमान में हमारे पास जो उपलब्ध है उससे आनंदित होने में ही समझदारी है. हमें जीवन की वास्तविकता को भी समझने का प्रयास करना चाहिए. सुख-दुख व अभाव-प्रचुरता दोनों ही जीवन के अनिवार्य अंग हैं. निदा फ़ाज़ली की पंक्तियाँ हैं :

जो जी चाहे वो मिल जाए,
कब ऐसा होता है,
हर जीवन जीवन जीने का
समझौता होता है,
अब तक जो होता आया है
वो ही होना है,
जीवन क्या है चलता-फिरता
एक खिलौना है,
दो आँखों में एक से हँसना
एक से रोना है।

जीवन एक विचित्र पहेली है. हम इसकी विचित्रता को समझकर उसके अनुरूप ढलने की बजाय उसके शिकार हो जाते हैं. यहां दुख और सुख साथ-साथ चलते हैं. हंसने के अवसर भी आते हैं तो रोने के अवसर भी आते हैं. दोनों को स्वीकार करना अनिवार्य है. वो दिन कभी नहीं आता जब दुखों अथवा अभावों से पूर्ण मुक्ति मिल जाए अतः सुखद क्षणों में आनंदित होने का प्रयास करना अनिवार्य है. सुखद क्षणों की स्मृतियां भी विषम परिस्थितियों में दुख की अधिकता को कम करने में सहायक होती हैं. एक बात याद रखनी चाहिए कि यदि सुख स्थायी नहीं होता तो दुख भी स्थायी नहीं होता. दिन के बाद रात और रात के बाद दिन का आना अपरिहार्य है.

जीवन में हार न मानना व आगे बढ़ने के लिए संघर्ष करना बहुत अच्छी बात है. हम बाहरी दुनिया में तो ख़ूब संघर्ष करते हैं लेकिन अपने अंदर बिलकुल नहीं झांकते. यदि हम अपने अंदर के संघर्ष को कम कर लें तो बाहरी संघर्ष भी कम हो जाए और हम अपेक्षाकृत सुखी हो जाएं. हमें जीवन में जो मिला है उसे स्वीकार कर उससे प्यार शुरू कर दें तो हमारी अधिकांश समस्याएं समाप्त हो जाएं. जीवन में संघर्ष को समाप्त कर आनंदित रहते के लिए जीवन की वास्तविकता को समझने के साथ-साथ जीवन के सकारात्मक पक्षों को याद रखिए व नकारात्मक पक्षों को भुला दीजिए.

-ए.डी.-१०६-सी, पीतमपुरा, दिल्ली-११००३४

नज़र कृष्ण की हो तो, सारी दुनिया में प्रेम है, और नज़र राधा की हो तो, सारी दुनिया में कृष्ण है....

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण 1-**प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर** 2. **बिक्री की व्यवस्था**
3-**प्रचार-प्रसार की व्यवस्था** 4-**विमोचन की व्यवस्था**

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com

लघु कथाएं

ससुराल

शादी के बाद पहली बार रीना घर रहने आई. बड़ी मुश्किल से दस दिन रहने की अनुमति मिली थी. घर पहुँचत ही उसकी निगाहें मॉ के कमरे, घर के कोने-कोने पर घूमने लगी. मैं हैरान थी ऐसा क्यूँ? कुछ देर मुझे कुछ अजीब सा लगा. वह दस दिन रही, उसने घर का कोना-कोना सॅवारा. मुझे किसी भी काम को हाथ न लगाने दिया. मेरे पास यह बच्ची 23 साल रही, कभी-कबार कोई भी काम अपनी मर्जी से करती तो करती वरन् हॅसती-खेलती बहाने बनाकर टाल ही जाती मेरा काम. छोटे बच्चे की तरह लिपटकर फरमाइशें पूरी कराती. पर अब ऐसा कुछ भी न था. कल उसे वापस जाना था कि मुझसे रहा न गया. पूछ ही बैठी कि इतना बदलाव मात्र महीने भर में कैसे आ गया. वो मुस्कुरा दी फिर मुझसे लिपट कर बाली, ''मॉ, मेरे ससुराल में सब सुबह जल्दी उठ जाते हैं, जरा सी आहट सुन मैं भी जग जाती हूँ, फिर सारा दिन मॉ, बापू व दादी सास, दीदी सब मिल-मिलकर काम करते हैं और दिन का पता भी नहीं चलता कहॉ निकल जाता है? रात को थक कर एकदम नींद आ जाती है, यहॉ आने से पहले महसूस हुआ कि मॉ, तू अकेली कितनी थक जाती होगी, दूसरे के घर जाकर सबका ख्याल रखना फर्ज और अपनी मॉ का तिल भर भी ध्यान न रखना, कितना बड़ा अन्याय?'' ''अरे पगली ऐसा क्यों सोचा तूने?'' मैंने कहा तो वह फफक पड़ी और बोली, ''मॉ, जब समय था तो समझ न थी, आज समझ आई तो समय ही नहीं हैं। पर तेरा काम करके मुझे पहली बार जो सुकून मिला है मैं ही जानती हूँ।

-शबनम शर्मा, सिरमौर, हि०प्र०

दो लाख रुपया

शांता शर्मा बूढ़े हो गये थे काम करने न जाते थे पूजा करके सत्यनारायण पूजा तथा संकष्ठि, विशेष पूजा आदि करके पेट पालते थे, एक छोटा सा घर था. दो बेटी, दो बेटे ये सबका विवाह हुआ था. बड़ी बेटी दुकान रखे थे, दूसरी बेटी आस्पताल में हेल्पर थी.

शांता की तबीयत ठीक न होने के कारण शर्माजी बहुत कष्ट से खाना पकाकर खाते थे. बच्चों को कितना कष्ट उठाकर पाला पोसा, बड़े होने के बाद (बहू आने के बाद) कोई भी न देखा. शांता भी अपना कर्म मानकर चुप थी. एक दिन बड़ी बेटी आकर बोली 'मैं बैंक से ऋण ली हूँ. बेटा पढ़ रहा है फीस भरना है. बी.एड लिए के लिए. तुम्हारे पास सोने की चूड़ी है न मुझे दे दो. पंद्रह दिन से भूखे है कहकर रोने लगी. मुझे घर किराये पर लेना है अडवान्स देना है पचास हजार पति तो कुछ कमाई करता नहीं. शादी तो तुम्ही की हो. मैं क्या करू? दे दो माँ कहकर गला पीट पीटकर रोने लगी. शांता ने सोचा हम बूढ़े है हमे तुम जिम्मेदारी से देखकर निभाना, लेकिन उल्टा हो गया है. हमे अब भी संभालना है? कहते हुए चलो बाहर हमारे पास कुछ न मांगना.

बेटी ने पांव पकड़कर माँ मर्यादा का प्रश्न है. दो लाख रूपया देना है. घर बेचकर मुझे दे दो माँ कहती रही. घर बेचकर जाना कहा. हम शांता कहती रही लेकिन बेटी जिद्दी से और किसको दोगे तुम्हारा हार, चूड़ी दे दो कहते हुए हाथ से कंगन और हार जबरदस्ती ले ली. शांता निंदा करती रही झगड़ा करके दो कंगन हार लेकर भाग गई. शांता चिल्लाती रही बेटी ही दुश्मन बनकर शत्रू के जैसे दिन में आकर चोरों के जैसे लेके भाग गई. दो लाख रूपये इस तरह माता से झगड़ा करके ले के चली गई थी.

-जे.वी.नागरत्नमा, शिमोगा, कर्नाटक

तालियाँ

समूचा पंडाल लोगों से भर गया था। लोगो की भारी भीड़ देखकर नेता जी बहुत खुश हुए। नेता जी ने अपना ओजस्वी भाषण सुनाना शुरू किया। लोग नेता जी का भाषण सुनने में तल्लीन थे। लेकिन वे भाषण पर तालियाँ नहीं बजा रहे थे। इस बात से नेता जी बड़े निराश दिखई देने लगे तो उसके समर्थकों ने लोगों से तालियाँ बजाने का अनुरोध व आग्रह भी किया। पर लोग थे कि तालियाँ बजाने का नाम नहीं ले रहे थे।

तभी नेता जी को एक उपाय सूझा। उन्होने लोगों से आग्रह किया कि वे भाषण पर न सही पर तालियाँ बजाने में कंजूसी न करें। तालियाँ बजाने से मन प्रसन्नचित होता है तथा स्वास्थ्य ाीि ठीक रहता है। नेता जी की यह बात सुन लोगों ने तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण को गूंजा दिया।

तालियों की गड़गड़ाहट से खुश थे। वहीं लोग तालियाँ बजाकर खुश थे। **-रोहित यादव, मंडी अटेली-हरियाणा**

आपस में मिल-जुलकर रहें

- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

१९४७ के बंटवारे का दर्द वो ही समझ सकते हैं, जिन्होंने उस दर्द को स्वयं सहा है. अगर हम समझ पाते तो आज हम सब भारतीय होते न कि गुजराती, मराठी, पंजाबी, बिहारी, दक्षिणी-पश्चिमी, उत्तरी...आजादी के बाद भी हमने आजाद भारत में तमाम दंगे किये हैं. कभी राजनीति के शिकार होकर तो कभी धर्म में अंधे होकर. राम-रहीम की लड़ाई में मानवता कब दफन हो गई पता भी नहीं चला. क्या भारत की नई पीढ़ी जानती है कि 1947 के दंगे कितने भीभत्स, भयानक थे. कत्ल, मारकाट, बलात्कार जैसे घिनौने कुकर्म किये गये वो भी सौ-दो सौ की संख्या में नहीं हजारों हजार की संख्या में, अपहरण, लूट, विश्वासघात, धर्मांतरण की ऐसी आँधी आई थी उस दौर में, जिन लेखकों ने उस बंटवारे की घटना का जिक्र किया है वे रो-रोकर ही लिख पाये द्य

बंटवारे की हैवानियत का सबसे बड़ा शिकार पंजाब हुआ था द्य उस दंगे में इंसान ही इंसान के खून का प्यासा हो गया था द्य दहशत भरे उस काल में करीब १० लाख से अधिक लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया था द्य क्या हम बीते खूनी इतिहास से कुछ सीख लेंगे द्य आपको बतादें कि बंटवारे के जिम्मेदार हमारे देश के ही कुछ स्वार्थी नेता थे द्य और आज भी कुछ स्वार्थी नेता अपनी स्वार्थ भरी रोटियां सेकने के लिए दंगों को भड़काने का कार्य करते हैं द्य साथियों भारत में अलग-अलग भाषायें, रीति-रिवाज, ध र्म, पहनावा है, लेकिन हम सब भारतीय हैं द्य हम किसी एक प्रांत तक सीमित न रहें द्य हम जैसे भी हैं, हैं तो भारतवासी द्य

हमारा संबिधान, हमारे धर्म हमें एक रहने की शिक्षा देते हैं द्य मानव मात्र ही नहीं सम्पूर्ण जीवजन्तुओं से प्रेम करने की शिक्षा देते हैं हमारे महापुरुष द्य साथियों! किसी के बहकावे में न आयें, हमेशा अपनी मातृभूमि - जन्मभूमि की सेवा में तत्पर रहें द्य आपस में मिल-जुलकर रहें द्य क्योंकि आज हमें जरूरत है इंसानियत की, आदमी आदमी की सहायता करे... एक-दूसरे की खुशियों में शामिल हों, एक-दूसरे के दुख दर्द बांटें द्य हम नफरत कब तक करते रहेंगे ,कब तक एक-दूसरे का अपमान करते रहेंगे द्य यह सारी प्रथ्वी प्यार स्नेह की भूखी है द्य माफ कीजिये दोस्तों... धर्म से बढ़कर इंसानियत है द्य इंसानियत हमारे साथ पैदा होती है और हमारे जाने के बाद भी जिंदा रहती है द्य धर्म बाद में पैदा होता है और हमारे साथ ही मिट जाता है द्य हमें अपनी आत्मा विषैली नहीं, अमृतमयी बनानी है द्य खून-खराबे से दूर मानवी सज्जनता में जीना है द्य यही हमारे धर्म हमें शिक्षा देते हैं द्य तो आइये मित्रों आपस में मिलजुलकर रहें द्य

नेताओं के बहकावे में कतई नहीं आयें द्य क्या आपने कभी किसी नेता या उसके परिवारी जन को दंगों की भेंट चढते देखा है द्य और तो और उस ध र्म गुरू और उसके परिवारी जन को दंगों में मरते-कटते देखा है जो कहते हैं हमारा धर्म संकट में है, नहीं न तो भले मानुषों आपस में लड़ो मत सवाल करो सरकार से भूख पर, गरीबी पर, बेरोजगारी पर, शिक्षा पर न कि धर्म पर...

तुम भूखें नंगों ने कभी सोचा है कि जिस धर्म गुरू, नेता, पार्टी का झंड़ा उठाये फिरते हो उसकी सम्पत्ति कितनी है द्य सच्चाई सुनोगे तो शायद बेहोश हो जाओगे द्य अरे भुल्लकड़ भारतीय जनता अपने इतिहास से कुछ सीखो और धर्म-वर्म को भूलकर अपने परिवार, अपने राष्ट्र की सोचो द्य ये हिंदू - मुस्लिम, सिख - ईसाई वाला खेल बहुत खेल लिया, अब बंद करो द्य जब राष्ट्र का जन-धन जलकर खाक हो जाता है तब इस देश की पुलिस - अन्य सुरक्षा बल हरकत में आते हैं और जब मजदूर, आदिवासी, किसान अपने हक की थोड़ी सी आवाज उठायें तो बड़ी बेदर्दी से उनकी आवाज दबा दी जाती है द्य पता है क्यों? क्योंकि यह सब स्क्रिप्ट द्वारा किया जाता है द्य सारी पटकथा नेताओं द्वारा लिखी जाती है द्य पुलिस - सेना तो बस नेताओं के हाथों की कठपुतली बनकर रह जाते हैं द्य उनके इसारे पर ही अपना खेल दिखाते रहते हैं द्य

-ग्राम रिहावली, डाक तारौली गूजर, फतेहाबाद, आगरा, २८३१११

रहिमन वहां न जाइए, जहां जमा हों लोग
ना जाने किस रूप में लगे कोरोना रोग

सब तुम्हारा ही तो है

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा,
छिन्दवाड़ा म.प्र.

हाथ में चाकू लिए वह पिता के कमरे की तरफ बढ़ा. पिता गहरी नींद में थे. पिता के चेहरे पर दृष्टि पड़ते ही बचपन की स्मृतियॉं हिलोरे मारने लगी. पिता उसे गोद में लिए खिला रहे हैं. हाथ पकड़कर स्कूल ले जा रहे हैं. उसके रोने पर उसे चुप कराने के लिए खिलौने दे रहे हैं. उसके चेहरे पर हंसी लाने के लिए जोकर की तरह हरकतें कर रहे हैं. वह कमरे से बाहर आ गया. ये क्या करने जा रहा था वहा? अपने पिता की हत्या, उफ् कितना घृणित विचार था. क्या सिर्फ इसलिए कि पिता ने उसके कुछ भी मांगने पर यही उत्तर दिया कि मेरे बाद सब तुम्हारा ही तो हैं. लेकिन जरूरत तो अभी हैं. अभी क्यों नहीं देते. बचपन में तो एक से एक कपड़े, खिलौने और खाने की चीजें लाकर देते थे. फिर अब क्यों नहीं देते. उसने मास्टर ड्रिग्री पूर्ण होते ही नौकरी की तलाश शुरू कर दी और पिता ने उसके स्कूल पूर्ण करते ही उसके खर्च में कौटती प्रारम्भ कर दी थी. कॉलेज आते-आते तक तो वह तरसने लगा था, छोटे-बड़े शौक पूरे करने के लिए. वह पिता से मांगता,

अनुरोध करता, मिन्नतें करता. लेकिन पिता उससे कहते-''अब तुम बड़े हो गये हो. केवल अतिआवश्यक चीजों पर ही खर्च करूंगा. तुम्हें पैसो की कीमत समझनी चाहिए. इस घर में तुम्हारा रहना, खाना सब फ्री है. पढ़ाई का खर्चा उठा ही रहा हूँ और इससे ज्यादा नहीं कर सकता. कपड़े है तो तुम्हारे पास चार जोड़ी. इससे ज्यादा का क्या करोगे? मोबाइल मोटर साइकिल जो युवाओं के लिए जरूरत थी, समय की. उसे पिता ने कहकर लेने से मना कर दिया कि घर में लेंड़लाइन हैं. फिर मोबाइल खरीदने भर से चल नहीं जाता. उसे रिचार्ज कराने के लिए बार-बार पैसे कहां से लाओगे, गाड़ी में पेट्रोल लगता हैं. इस उम्र में बार-बार बाप से पैसे मांगना ठीक नही है और न ही पिता ये फिजूलखर्ची बर्दास्त कर सकते हैं. लेकिन ये जरूरी चीजे थी आज के समय में. वह मन मारकर जीता रहा. दोस्तों के सामने उपेक्षित होता रहा। दोस्तों के पास ये सब चीजें देखकर उसका मन ललचाता, तड़पता तरसता और वह बार-बार पिता से आग्रह करता. पिता द्वारा उसके प्रस्ताव को ठुकराये जाने पर वह मॉ से कहता. मॉ उसे समझाती. अभी पढ़ाई पर ध्यान दो. एक बार नौकरी पर लग जाओं फिर जो चाहे खरीद लेना. वह फिर मॉ से अपनी इच्छाओं के लिए गिड़गिडाता. मॉ उसके पिता से बेटे की इच्छा रखने के लिए कहती. पिता अपनी पत्नी को समझाते हुए कहते-''बुढ़ापे में पैसा ही काम आता हैं. आज सब इनपर खर्च कर दे और कल जब जेब में रूपये न होगे तो यही बेटा पानी तक के लिए नहीं पूछेगा. देख नहीं रही हो आजकल के लड़कों को. शर्माजी ने अपने बच्चों के लिए क्या कुछ नहीं किया. बच्चों के शौक पूरे करते-करते कंगाल हो गये. बेटों ने अपनी अलग दुनियॉं बसा ली. अब बढ़े माता-पिता अकेले दो कमरे के मकान में पड़े रहते हैं और बेटे शानदार बंगले में रहते हैं. नौकर-चाकर, कार, सारी सुख सुविधायें हैं. ये सब किसकी बदौलत. बाप ने ही किया है न सब. बेटे की नौकरी के लिए लाखों रूपये की रिश्वत दी. बेटे के लिए कॉलोनी में अलग मकान खरीदा और आज वही बेटा उन्हें पूछता तक नहीं

शर्माजी के पास बैंक बेलेन्स होता तो उनके पास मक्खी की तरह भिनभिनाते. फिल्मों में नही देखा. अवतार नहीं देखी राजेश खन्ना की.''

''तो बेटा यूँ ही तरसता रहे.'' मॉ कहती.

''नहीं अपने दम पर करे. ''पिता उत्तर देते.

''और यदि नहीं कर पाया तो'' मॉ चिंतित स्वर में कहती.

''तो फिर हम तो हैं. हमनें उसके लिए ही जोड़ा हैं. हम इसे अपने साथ तो नहीं ले जायेगें.'' पिता गर्व से कहते.

''बुढ़ापे में पैसा ही काम आता हैं. आज सब इनपर खर्च कर दे और कल जब जेब में रूपये न होगे तो यही बेटा पानी तक के लिए नहीं पूछेगा. शर्माजी ने अपने बच्चों के लिए क्या कुछ नहीं किया. बच्चों के शौक पूरे करते-करते कंगाल हो गये. बेटों ने अपनी अलग दुनियॉं बसा ली.

मॉ बेटे के सिर पर प्यार से हाथ रखकर कहती. ''सब तुम्हारा ही तो हैं.''

''लेकिन किस काम का मॉ. मुझे आज जरूरत है. बाद में ये सब मेरे किस काम का.''

''बेटे के प्रश्न पर मॉ चुप हो जाती. ऐसा तो नहीं हैं कि पिता के पास कोई कमी थी. अच्छा बैंक बेलेन्स, गाड़ी, मकान सब था उनके पास. सिंचाई विभाग में इंजीनियर के पद से रिटायर हुए थे. घर में सारी सुख-सुविधायें थी. पेंशन भी अच्छी खासी थी. फिर बेटे के लिए कुछ क्यों नहीं निकलता पिता की जेब से. आज जब उसके दोस्त फर्राटे से अपनी मोटर साइकिल पर जाते तब वह सिटी बस में धक्के खाता. उसके दोस्त तरस खाकर उसे लिफ्ट दे देते. वह स्वयं को हीन और तुच्छ महसूस करता. लेकिन ये सोच-सोच कर स्वयं को तसल्ली देता कि आज नहीं तो कल मेरी नौकरी लग जायेगी. तब सारी इच्छायें पूरी कर लूंगा. इस तरह मन मारकर पिता के साधन-सम्पन्न होते हुए भी वह अभाव की सी जिन्दगी जी रहा था. दोस्तों की मोटर साइकिल पर पीछे बैठकर वह कॉलेज जाता. दोस्तों के खर्च पर वह सिनेमा, पिकनिक पार्टी में शामिल होता.

उसके एक मित्र विनोद ने कहा भी था एक बार-''तुम्हारे पिता तुम्हारे लिए इतना तो कर ही सकते हैं. एक गाड़ी, एक मोबाइल जेब खर्च के लिए कुछ रूपये.''

''उन्होंने कई बार स्पष्ट मना कर दिया.'' वह उदास होकर बोला.

''क्या वे तुम्हारे वास्तविक पिता हैं.'' मित्र ने संदेह व्यक्त किया.'' आजकल ये चीजें आम हैं. जरूरी हैं.''

''वे इसे फिजूलखर्च मानते हैं.'' वह बोला.

''लेकिन तुम्हारे पिता सम्पन्न हैं. कर सकते हैं, इतना तुम्हारे लिए.''

''वे कहते हैं मेरे बाद सब तुम्हारा हैं''

''उनके बाद,'' विनोद ने कहां-''तो क्या वे चाहते हैं कि तुम उनके मरने की प्रतीक्षा करो या उन्हें मार ड़ालो.''

''इस बात पर उसनें विनोद को डांट दिया था. किन्तु अब इस समय उसके भविष्य का सवाल था उसकी अखिरी उम्मीद थी यह नौकरी. उसने पिता से कहा-''मेरी आयु नौकरी के लिए समाप्त हो रही है. यह अंतिम अवसर हैं. पॉच लाख रूपये की मांग हो रही है. मैं लिखित परीक्षा अपनी मेहनत से पास कर चुका हूॅ साक्षात्कार भी उत्तीर्ण कर चुका हूॅ. ज्वाइन लेटर पॉच लाख देने के बाद ही मिलेगा.''

पिता ने स्पष्ट इंकार करते हुए कहा-'' तुम योग्य हो तो जरूर तुम्हें नौकरी मिलेगी.''

''केवल योग्यता से काम नहीं चलता''

''मै तुम्हें रूपये नहीं दे सकता.''

''आप उधार समझकर दे दीजिए.''

''नहीं''

''आप ब्याज पर दे दीजिये.''

''अपनी बकवास बन्द करो.''

उसके ऑसू निकल आये. उसने मॉ से कहा. मॉ ने उसके पिता से बहुत मिन्नते की. लेकिन उन्होंने कहा-

''अभी कुछ नहीं दूंगा. मेरे बाद सब उसका हैं.''

नौकरी किसी और को मिल गई. वह उदास हो गया. उसकी अंतिम आस भी टूट गई विनोद का स्वर उसके कानों में गूजने लगा.

''तो क्या वे चाहते हैं कि तुम उनके मरने की प्रतीक्षा करो या उन्हें मार ड़ालों.''

उसके मन में खूनी विचार पनपा. वह चाकू लेकर पिता के कमरे में गया और पिता के चेहरे पर दृष्टि पड़ते ही पिता का स्नेह याद आ गया. वह वापिस आ गया अपने कमरे में. अपने विचारों पर उसे शर्मिन्दगी हुई.

पिता की उम्र 65 वर्ष की थी. उनके अपने अनुभव थे. उन्होंने देखा था कि गरीब माता-पिता की संताने उन्हें त्याग देती हैं. वे स्वयं को आर्थिक रूप से मजबूत रखना चाहते थें. ताकि उनका बुढ़ापा उन लोगों की तरह न गुजरे. जिन्होंने अपनी संतानों का भविष्य संवारने के लिए अपने जीवन भर की जमा पूंजी खो दी और बुढ़ापे में उन्हें पानी देने वाला भी कोई नहीं. संताने योग्य बनकर अपने-अपने जीवन में व्यस्त हों गई और मॉ-बाप कष्ट तकलीफों में मरते रहे.

मॉ बेचारी क्या कहती. पुत्र की परेशानी देखकर पति से कहती. लेकिन पति उसे संसार की सच्चाई और संतानों की स्वार्थता की मिसाल देकर चुप करा देते. वह पूरी तरह से निराश हो चुका था. सरकारी नौकरी की आखिरी उम्मीद भी खो चुका था. उसे अपने पिता से चिढ़ सी छूटने लगी थी. मर जायेगे तो अपने साथ बांधकर ले जायेंगें अपनी धन-दौलत. नहीं चाहिए मुझे तुम्हारा रूपया तुम्हारी मदद. आखिर मेरा भी अपना आत्म-सम्मान हैं. जब सबसे ज्यादा जरूरत थीं. तब नहीं दिये तो अब तो जीवन मात्र जीना हैं. व्यापार न सहीं. कोई अच्छा सा प्राइवेट जॉब ही सही. वह प्राइवेट कम्पनियों के दरवाजे पर दस्तक देने लगा. उसके सारे दोस्त अच्छी सरकारी नौकरी में थे या अपना व्यवसाय शुरू कर चुके थे. पिता देखते रहे खामोशी से पुत्र के चेहरे की उदासी को. उसके मलिन

होते स्वप्नों को. पिता कभी-कभी अकेले में उदास भी हो जाते. उन्हें लगता कि बेटे के नाम पर कितनी एफ०डी० कितनी रकम जमा कर चुकें हैं क्यों न उसे तोड़कर कुछ दे दिया जाये. लेकिन जैसे ही उनका वात्सल्य जागता. अगले ही पल परिचितों के नालायक पुत्रों के चेहरे उनके आगे घूम जाते. पीड़ित माता-पिता का एकान्त, उदासी, गरीबी, व्यथा में उन्हें अपना चेहरा नजर आने लगता. वे फिर अपना हाथ पीछे खींच लेते. छोटे-छोटे प्राइवेट जॉब करते-छोड़ते उसकी उम्र 40 वर्ष की हो गई. कहीं उसे इतना वेतन नहीं मिल रहा था कि अपने जीवन का निर्वहन स्वयं कर सके. अपने लिए रोटी-कपड़ा और मकान स्वयं जुटा सके. ऐसे में जो विवाह प्रस्ताव आये. उन्हें वह स्वयं मना करता रहा. पिता की कठोरता ने उसे भी कठोर बना दिया था. मॉ ने विवाह के लिए जोर दिया, तो उसने स्पष्ट शब्दों में कहा-''मेरे वेतन पर मेरा ही गुजारा नहीं होता. दूसरे को क्या खिलाऊँगा?'' मॉ ने जैसे ही कहा-'' हम लोग तो हैं. ''उसने क्रोधित होकर कहा-''मुझे तुम लोगों का पैसा भी नहीं चाहिए. तुम लोगों का पैसा मेरे लिए हराम हैं.''

''ऐसा नहीं कहते बेटा'' मॉ ने रोते हुए कहा.''सब कुछ तुम्हारा ही तो है.''

बेटे ने क्रोध में कहा-''मेरा कुछ नहीं हैं. अपने बुढ़ापे की चिन्ता में आप लोगों ने मेरे पूरे जीवन को अभावग्रस्त कर दिया. छोटी-छोटी चीजों के लिए मन को मारकर जिया हूँ मैं. अब तो अधेड़ अवस्था की ओर जा रहा हूँ. इस उम्र में कुछ मिला भी तो क्या? अब इच्छा ही नहीं रही किसी चीज की. ''कहते-कहते उसकी ऑखों में आंसू आ गये. वह बाहर निकल गया. उसकी बाते पिता के कानों तक पहुँच गई. पिता को अपनी कठोरता पर अफसोस हुआ. ''उफ् मेरा बेटा 40 साल का हो गया. अधेड़ अवस्था में पहुॅच गया और मैं पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर पैसे अपने बुढ़ापे के लिए बचाता रहा. मैंने कुछ नहीं किया अपने बेटे के लिए. मेरे बेटे को न नौकरी मिली. न उसका विवाह हो पाया. कितना गिड़गिड़ाया समय-समय पर मेरे सामने. लेकिन मैंने उसकी एक भी इच्छा पूरी नहीं की. लानत है. मेरे पिता होने पर. मैंने अपने बेटे की जवानी को जीवन के कठोर हाथों में देकर उसे नष्ट कर दिया.

''नहीं, नहीं बहुत हो गया. अब और नहीं. अब सारी बचत राशि को तोड़कर बेटे के लिए अच्छे व्यवसाय की व्यवस्था करूँगा. लेकिन उसके पहले मैं उसके लिए एक बढ़िया स्मार्ट फोन एक मोटर साइकिल ढ़ेर सारे अच्छे कपड़े खरीदूंगा. पिता सारी एफ०डी० लेकर बैंक की ओर चल पड़े.

''आप कल से काम पर न आये. ''मैंनेजर ने कहा.

''क्यूँ सर, क्या गलती हो गई मुझसे'' उसने पूछा.

''देखिये, हमें चार हजार मासिक का कर्मचारी मिला गया हैं. फिर हम आपको पॉच हजार महीने क्यों दे? ''मैनेजर ने कहा.

''लेकिन सर''

''सॉरी ''

वह उदास कदमों से ऑफिस से बाहर निकल गया. उफ् क्या बदनसीबी हैं. पॉच हजार की नौकरी के लायक भी नहीं हैं वह. बेकार है मेरा जीवन. क्या करूंगा जीकर. 40 साल में इस लायक भी नहीं हुआ कि अपने जीवन को उचित दिशा दे संकू. वह अन्दर से टूट चुका था. इस उम्र में अब किस कम्पनी के दफ्तर में नौकरी मांगता फिरूं. वह छोटे शहर का निवासी था. यहॉ प्राइवेट स्कूल, कॉलेजों, दफ्तरों में पांच हजार रूपये वेतन पर ही लोग रखे और निकाले जाते हैं. यहॉ मुम्बई, दिल्ली की कम्पनियों को तरह कोई नहीं पूछता कि आप कितना वेतन लेंगे. उन्ही कम्पनियों के दफ्तर छोटे शहरों में होते हैं तो वेतन छोटे शहर के हिसाब से ही मिलता हैं. वह शराब की दुकान के सामने से गुजरा. आगे बढ़ा और रूक गया. हार की मार बर्दास्त करने की क्षमता नहीं थी उसमें. शरीफ ईमानदार बनके भी क्या हासिल कर लिया उसने. वह शराब की दुकान में चला गया. कुछ देर बाद वापिस निकला. तब उसके कदमों में लड़खड़ाहट थी, जीवन से निराशा की. पिता की कुजूसी भरे कठोर व्यवहार की. वह बड़बड़ाता हुआ कदम बढ़ाने लगा. कई छोटे-मध्यम आकार के वाहनों से टकराता, बचता चलता रहा. सामने तीव्र गति से एक ट्रक आ रहा था. उसे संभलने का होश नहीं था. उसने ट्रक देखकर भी अनदेखा कर दिया. ट्रक वाले ने अंतिम स्तर पर बचाने का प्रयास किया. किन्तु इतनी तीव्र गति में तो ब्रेक भी काम नहीं करते और दिमाग भी. एक चीख के साथ वह ट्रक की चपेट में आ गया. पुत्र का शव सामने पड़ा था. मॉ बेहोश हो चुकी थी पुत्र की लाश देखकर और पिता अपने बेटे की लाश पर जमा रकम के कागजात, मोबाइल, मंहगे कपड़े रखकर रो रहे थे.

एक मास्क से उनका क्या होगा जिनके कई चेहरे है

भारी बटुआ युवकों को बना रहा है दर्दनाक बीमारी का शिकार

-विनोद कुमार

जींस या पैंट की पिछली जेब में भारी बटुआ रखने की प्रवृति युवाओं को कमर और पैरों की गंभीर बीमारी का शिकार बना रही है. विशेषज्ञों के अनुसार जींस या पैंट की पीछे वाली जेब में भारी वॉलेट रखने से 'पियरी फोर्मिस सिंड्रोम' अथवा वॉलेट न्यूरोपैथी नाम की बीमारी हो सकती है जिसमें कमर से लेकर पैरों की उंगलियों तक सुई चुभने जैसा दर्द होने लगता है.

नई दिल्ली के इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल के वरिष्ठ आर्थोपेडिक सर्जन डा. राजू वैश्य बताते हैं कि बीमारी के शिकार वे लोग ज्यादा होते हैं जो पैंट या जींस की पिछली जेब में मोटा वॉलेट रखकर घंटों कम्प्यूटर पर काम करते रहते हैं. आज के समय में इस बीमारी के सबसे ज्यादा शिकार युवा हो रहे है. कंप्यूटर इंजीनियरों को इस बीमारी का खतरा अधिक होता है. इस बीमारी का समय रहते उपचार नहीं होने पर सर्जरी करवानी पड़ती है.

उन्होंने बताया कि जब हम पैंट में पीछे लगी जेब में मोटा बटुआ रखते हैं तो वहां की पायरी फोर्मिस मांसपेशियां दब जाती है. इन मांसपेशियों का संबंध सायटिक नर्व से होता है, जो पैरों तक पहुंचता है. पैंट की पिछली जेब में मोटा बटुआ रखकर अधिक देर तक बैठकर काम करने के कारण इन मांसपेशियों पर अधिक दवाब पड़ता है. ऐसी स्थिति बार-बार हो तो पियरी फोर्मिस सिंड्रोम अथवा वॉलेट न्यूरोपैथी नाम की बीमारी हो सकती है, जिससे मरीज को अहसनीय दर्द होता है. जब सायटिक नस काम करना बंद कर देती है तो पैरों में बहुत तेज दर्द होने लगता है. इससे जांघ से लेकर पंजे तक काफी दर्द होने लगता है. पैरों की अंगुली में सुई सी चुभने लगती है.

नई दिल्ली के फोर्टिस एस्कार्ट हार्ट इंस्टीच्यूट के न्यूरो सर्जरी विभाग के निदेशक डा. राहुल गुप्ता बताते हैं कि मोटे पर्स को पिछली जेब में रखकर बैठने पर कमर पर भी दबाव पड़ता है. चूंकि कमर से ही कूल्हे की सियाटिक नस गुजरती है इसलिए इस दबाव के कारण आपके कूल्हे और कमर में दर्द हो सकता है. साथ ही कूल्हे की जोड़ों में पियरी फोर्मिस मांसपेशियों पर भी दबाव पड़ता है. इसके अलावा रक्त संचार के भी रूकने का खतरा होता है. हमारे शरीर में नसों का जाल है जो एक अंग से दूसरे अंग को जोड़ती हैं. कई नसें ऐसी भी होती हैं जो दिल की धमनियों से होते हुए कमर और फिर कूल्हे के रास्ते से पैरों तक पहुंचती हैं. जेब की पिछली पाकेट में पर्स रखकर लगातार बैठने से इन नसों पर दबाव पड़ता है, जिससे कई बार खून का प्रवाह रुक जाता है. ऐसी स्थिति लंबे समय तक बने रहने से नसों में सूजन भी बढ़ सकती है.

इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल के आर्थोपेडिक सर्जन डा. अभिषेक वैश बताते हैं कि पैंट या जींस की पीछे की जेब में मोटा पर्स रखने से शरीर के निचले हिस्से का संतुलन भी बिगड़ जाता है जिससे कई तरह की शारिरिक परेशानियां हो सकती हैं. पिछली जेब में मोटा वालेट होने की वजह से शरीर का बैलेंस ठीक नहीं बनता है और व्यक्ति सीधा नहीं बैठ पाता है. इस कारण ऐसे बैठने से रीढ़ की हड्डी भी झुकती है. इस वजह से स्पाइनल जाइंट्स, मसल्स और डिस्क आदि में दर्द होता है. ये ठीक से काम नहीं करते हैं. इतना ही नहीं ये धीरे-धीरे इन्हें डैमेज भी करने लगते हैं.

डा. अभिषेक वैश का सुझाव है कि जहां तक हो सके घंटो तक बैठे रहने की स्थिति में पेंट की पिछली जेब से पर्स को निकालकर कहीं और रखें। नियमित रूप से व्यायाम करे. पेट के बल लेटकर पैरों को उठाने वाले व्यायाम करें. जिन्हें यह बीमारी है वे अधिक देर तक कुर्सी पर नहीं बैठे. कुर्सी पर बैठने से पहले ध्यान रखे कि बटुआ जेब में न हो. ड्राइविंग करते समय भी अधिक देर तक नहीं बैठना चाहिए कोशिश करे छोटे से छोटे पर्स का उपयोग करे या अपना

पर्स आगे की जेब में रखे. अगर आपको कमर में दर्द हो रहा हो तो चिकित्सक से मिलें. अगर यह बीमारी आरंभिक अवस्था में है तो व्यायाम से भी लाभ मिल सकता है. बीमारी के बढ़ने पर सर्जरी की जरूरत पड़ सकती है जो काफी महंगी होती है.

-संपादक, हेल्थ स्पेक्ट्रम,
vinodviplav@gmail.com

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान, स्व.किशोरी लाल सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान

गद्य के क्षेत्र में: डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान, उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान, हिन्दी सेवी सम्मान

समाज सेवा के क्षेत्र में: समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-

अन्य: कलाश्री, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान,

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अंतिम तिथि: ३० दिसम्बर २०२०

अध्यक्ष, श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
प्रयागराज-211011, उ.प्र., मो०: 09335155949,
ईमेल-psdiit@rediffmail.com

उत्तर प्रदेश डाक परिमंडल ने बनाया रिकार्ड

लाक डाउन में लोगों को घर बैठे उनके दरवाजे पर पैसे निकालने की सुविधा देने के क्रम में डाक विभाग ने उत्तर प्रदेश में ११ मई को आधार इनेबल्ड पेमेंट सिस्टम का महाअभियान चलाकर एक दिन में २.७४ लाख लोगों को लाभान्वित किया। इसके तहत ३० करोड़ रूपये से अधिक की राशि लोगों को घर बैठे प्रदान की गई। इसी के साथ उत्तर प्रदेश डाक परिमंडल ने पूरे भारत में एक दिन में सर्वाधिक लोगों को भुगतान करने का रिकार्ड बना लिया। विपदा के इस दौर में डाक विभाग की इस पहल को काफी सराहना मिल रही है।

उत्तर प्रदेश परिमंडल के चीफ पोस्टमास्टर जनरल श्री कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा ने कहा कि आईपीपीबी के माध्यम से डाक विभाग डाकिया और ग्रामीण डाक सेवक द्वारा घर-घर जाकर किसी भी बैंक से पैसा निकाल कर ग्राहकों को उपलब्ध करा रहा है। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के तहत भेजी गई रकम भी घर बैठे लोग डाकिया के माध्यम से निकाल पा रहे हैं। श्री सिन्हा ने बताया कि लाक डाउन के दौरान उत्तर प्रदेश में १६ लाख से अधिक लोगों को २ अरब ७८ करोड़ रुपये की राशि उनके बैंक खातों से निकालकर घर बैठे डाकिया द्वारा प्रदान की जा चुकी है।

लखनऊ मुख्यालय परिक्षेत्र के निदेशक डाक सेवाएँ श्री कृष्ण कुमार यादव ने कहा कि, असहाय लोग जो कि शारीरिक रूप से अक्षम हैं, वृद्ध या फिर सुदूर ग्रामीण क्षेत्र जहां पर एटीएम की सुविधा उपलब्ध नहीं है वहां पर भी डाक विभाग का डाकिया जाकर बैंक से पैसे निकाल कर लोगों को उपलब्ध करा रहा है। डाकियों के पास उपलब्ध माइक्रो एटीएम से प्रतिदिन एक व्यक्ति द्वारा आधार लिंक्ड अपने बैंक खाते से दस हजार रूपए तक की रकम निकाली जा सकती है। कोरोना महामारी के इस दौर में डाककर्मी सोशल डिस्टेंसिंग व पूरी एहतियात बरतते हुए समर्पण भाव के साथ कोरोना योद्धा के रूप में कार्य कर रहे हैं।

ऑन लाईन लाक डाउन ०२ के परिणाम घोषित

बायें से दाये क्रमशः श्री नरेन्द्र भूषण, श्री ईश्वर शरण शुक्ल, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', डॉ० अनीता पंडा

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा कोरोना काल में ऑन लाईन लाक डाउन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. जिसके प्रथम चरण के परिणाम पूर्व में ही घोषित किए जा चुके है तथा दूसरे चरण में राष्ट्र स्तरीय लाक डाउन प्रश्नोत्तरी एवं काव्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. जिसमें काव्य प्रतियोगिता में 15 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 15 राज्यों के करीब 1500 लोगों ने प्रतिभाग किया गया जिसमें लगभग 150 से 200 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिदिन अवलोकन किया गया. सक्रिय सहभागिता प्रतिदिन 50 प्रतिभागियों ने निभाई. परिणाम बहुत ही प्रतिस्पर्धा का रहा. उक्त जानकारी देते हुए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि काव्य प्रतियोगिता-2 में ऑन लाईन वीडियों के माध्यम से रचनाकारों ने प्रतिभाग किया। जिसके ऑन लाईन निर्णायक मंडल में गोधरा, गुजरात से प्राध्यापक डॉ० दिवाकर दिनेश गौड, मुंगेली, छत्तीसगढ़ से प्राध्यापक डॉ० चन्द्रशेखर सिंह, एवं सहायक प्राध्यापक नोएडा, उत्तर प्रदेश से डॉ. नीतू सिंह राय रही. परिणामों की घोषणा श्रीमती दीप्ति मिश्रा, उपकुलसचिव प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) विश्वविद्यालय, प्रयागराज ने की. उन्होंने संस्थान के द्वारा लाक डाउन के समय में विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए संस्थान परिवार की सराहना करते हुए कहा कि संस्थान यह कार्य निश्चित ही उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय है. निर्णय की घोषणा करते हुए उन्होंने बताया कि श्री नरेन्द्र भूषण, लखनऊ, उ.प्र. को प्रथम, श्री ईश्वर शरण शुक्ल, प्रयागराज, उ.प्र. को द्वितीय, श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव 'शैली', रायबरेली, उ.प्र. को तृतीय एवं डॉ० अनीता पंडा, शिलांग, मेघालय को चतुर्थ स्थान प्राप्त किया है. इसी प्रकार लाक डाउन 02, प्रश्नोत्तरी के परिणामों की घोषणा संस्थान के अध्यक्ष एवं प्राचार्य डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख, अहमदनगर, महाराष्ट्र ने किया.

उन्होंने बताया कि संस्थान लगभग 25 वर्षो से निरन्तर हिन्दी एवं समाज सेवा के कार्यो में लगा हुआ है. सरकार के

निर्णायकः डॉ० दिवाकर दिनेश गौड़, डॉ. चन्द्रशेखर सिंह, डॉ० नीतू सिंह राय

श्रीमती दीप्ति मिश्रा

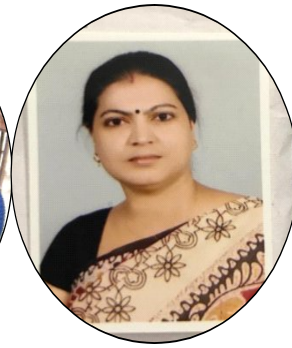

बायें से दाये क्रमशः श्री सतीश कुमार मिश्र, श्री पवन दूबे, श्रीमती सपना गोस्वामी, श्रीमती शिखा भारती

लॉक डाउन की घोषणा के बाद संस्थान द्वारा कई प्रतियोगिताएं प्रथम चरण में आयोजित हुई उनके परिणाम भी समयानुसार घोषित किए गए. दूसरे चरण में दिनांक 03 मई से 18 मई तक चली इस प्रतियोगिता में विभिन्न राज्यों से प्रतिदिन 150 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया. इस प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागी निम्नवत हैः-प्रथम स्थान श्री सतीश कुमार मिश्रा, संयुक्त सचिव, डिफेंस, थल सेना वर्कशाप किला, प्रयागराज, उ.प्र., द्वितीय स्थान श्री पवन कुमार दुबे, उप निरीक्षक, आईटीबीपी, नई दिल्ली, तृतीय स्थान-श्रीमती सपना गोस्वामी, प्रधानाचार्या, निशा ज्योति संस्कार भारती विद्यालय, प्रयागराज, चौथा स्थान-श्रीमती शिखा भारती, प्रयागराज, उ.प्र., पांचवा स्थान-श्रीमती दीप्ति मिश्रा, प्रयागराज, उ.प्र., छठवां स्थान-श्री शुभ द्विवेदी, प्रयागराज, उ.प्र., सातवां स्थान- श्रीमती शशि पाण्डेय, प्रयागराज, उ.प्र., आठवां प्रियाशु दूबे-देवरिया, उ.प्र., नौवा स्थान सुरेश सोनी-रावतसर-राजस्थान, दसवां श्रीमती संतोष शर्मा शान-हाथरस-उ.प्र., ग्यारहवा स्थान डॉ० सीमा वर्मा-लखनऊ-उ.प्र., 12वां सुश्री प्रियंका पाण्डेय- प्रयागराज, 13वां श्री अभिशेक सिंह, प्रयागराज-उ.प्र. 14वां श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव, रायबरेली, उ.प्र. को प्राप्त हुआ. आप सभी को बधाई.

बायें से दाये क्रमशः श्री शुभ द्विवेदी, श्रीमती शशि पाण्डेय

डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख

संस्थान के सचिव डॉ० द्विवेदी ने बताया कि लाक डाउन 03 प्रश्नोत्तरी एवं काव्य प्रतियोगिता चल रही है. 15 जून को लाक डाउन 03 के परिणामों की घोषणा की जाएगी उसके बाद लाक डाउन 01 से 03 तक के काव्य प्रतियोगिता के प्रथम तीन स्थान पाने वाले तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के प्रथम पांच स्थान पाने वाले विजयी प्रतिभागियों के बीच प्रतियोगिता होगी. इससे इसका प्रथम चरण पूरा होगा. इसी प्रकार 21 जून से द्वितीय चरण प्रांरभ होगा. द्वितीय चरण में तीन स्तर पर प्रतियोगिताएं होगी. सबसे अंत में प्रथम चरण के काव्य एवं प्रश्नोत्तरी तथा द्वितीय चरण के काव्य एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के तीन-तीन विजयी प्रतिभागियों का महा मूकाबला होगा. महा मूकाबले के परिणाम की घोषणा 14 सितम्बर को होने के बाद इस लाक डाउन प्रतियोगिता का समापन हो जाएगा. प्रश्नोत्तरी चार एवं काव्य प्रतियोगिता चार दिनांक 21 जून से प्रारम्भ होगी. इच्छुक प्रतिभागी 10 जून से अपना पंजीकरण दिए गए मोबाइल नंबर पर ह्वाट्सएप करके करा सकते है. मई से प्रारम्भ होगी जिसके लिए रचनाकारों से कविता पाठ करते हुए वीडियों मंगाया गया है। अगर किसी प्रतिभागी को कोई समस्या हो तो 9335155949 पर ह्वाट्सएप कर पूछ सकता है.

गुलमोहर (काव्य-संग्रह)

समीक्षक : डॉ. अनीता पंडा

'गुलमोहर' शिक्षाविद, कवि हृदय श्रीमती शशि ओझा जी की प्रथम कृति है. इसमें 54 कविताएँ संग्रहित हैं. जो गुलमोहर के वृक्ष के पुष्प, पत्र, शाखा, तना एवं मूल की भाँति आकर्षक एवं सन्देष रुपी सुगंध से आपूरित है. जिस प्रकार गुलमोहर उपवन को सौन्दर्य एवं सुगंध प्रदान करता है, उसी प्रकार भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य, प्रकृति संरक्षण, सामाजिक सरोकारों आदि संवेदनषील विशयों से सम्बंधित ये कविताएँ इस संग्रह के क्षेत्र को और भी व्यापक बनाता है.

कवियत्री शशिजी ने काव्य-संग्रह में भारतीय संस्कृति की परम्परा का निर्वाह करते हुए गुरु वंदना, सरस्वती वंदना, भारत माँ को समर्पित कविताएँ हैं. कवियत्री के अनुसार 'गुरु ही ज्ञान-चक्षु खोलते हैं' वे माँ सरस्वती से प्रार्थना करती हैं 'वर दे माँ, वर दे माँ, वर दे माँ सरस्वती.' साथ ही वे भारत माँ को नमन करते हुए लिखती हैं 'भारत माँ तुझको षत-षत नमन' मातृभूमि के साथ अपनी जन्मदात्री के प्रति श्रध्दा प्रकट करते हुए कहती हैं 'माँ को न भूलो, स्मरण करते रहो.'

भावी पीढ़ी के मन में राष्ट्र-गौरव, देश-प्रेम तथा भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा जागृति हेतु गणतंत्र दिवस, महात्मा गाँधी, भक्त शिरोमणि मीरा, महाराणा प्रताप, दयानन्द सरस्वती, सरदार वल्लभभाई पटेल, वतन, अब्दुल कलाम, वीर बालक (नारायण राव) एवं हिंदी भाषा का गौरव कविताएँ अपने उद्देश्य में पूर्णतः सफल रहीं हैं. कवियत्री मानवता का सन्देश देती है. 'मानव की प्रेरणा दें, आतंक को मिटा दें,/प्रेम, सौहार्द्र से रहें, सभी का कल्याण करें.' गणतंत्र दिवस कवियत्री शशि जी प्रकृति के प्रति संवेदनशील हैं. काव्य-संग्रह में प्रकृति के कई पहलू मिलते हैं. इसमें 'वृक्ष अपनी पीड़ा' कहता है, 'बसंत' मुस्काता है, 'नभ बरसो' में प्यासे को जल पाने की आतुरता है, 'वर्षा' में बरसात का सुन्दर चित्रण है, 'सावन' में रिमझिम फुहार है. कहीं 'वृक्ष की छाँव' शीतलता प्रदान करती है तो कहीं 'कौए की काँव-काँव' शोर मचाती है. प्रकृति के लिए कवियत्री का आशावादी दृष्टिकोण है. वे प्रकृति से व्यापकता माँगती हैं : 'मुझे साहस, धैर्य दो, /मैं सौन्दर्य से घर भर लूँ, बसंत का सौन्दर्य पा सकूँ, /उपवन-सा दिल बना सकूँ।' - बसंत 'साहित्य समाज का दर्पण होता है'- कथन को चरितार्थ करती काव्य-संग्रह की कविताओं में नैतिक मूल्यों की स्थापना, सामाजिक सरोकार तथा बदलते मूल्यों के प्रति गहन चिंतन परिलक्षित होता है. इनमें टूटते मूल्य, बेटी, बेटी की महिमा, माँ की सीख, माँ, मनुष्यता, परिश्रम, अनुभव के मोती आदि प्रमुख हैं, जो कवि-धर्म का समुचित निर्वहन करते हैं. इनकी संवेदनशीलता कविता 'बचा लो माँ' पाठकों को प्रभावित करेगी. उदाहरण

'मत मारो मुझे बचा लो माँ,
मैं बेटी हिंदुस्तान की।
दायित्व खर्चे से डरकर,
विवाह में दहेज से घबराकर,
खून के रिष्ते को तबाह कर,
कैसे चौन मिला, रूह काँपी नहीं।

कवियत्री की पैनी नजर छोटी से छोटी वस्तुओं पर है. सत्य है कि लेखन विषयों की भरमार है हमारे सामने, बस उस पर लेखनी चलने की आवश्यकता है. चाय, पिचकारी, परीक्षा, उषा, कविताएँ खिलते रहो, गुलाब, तिनका, गुलमोहर, मेरी गुड़िया जैसी कविताएँ विविधताओं को दर्शाती है. 'स्वान्तः सुखाय' लिखी 'परिजन हिताय' बन सन्देश देती है.

'गुलमोहर' अपने आप में विविध विषय-वस्तु को समेटे हुए है. कहीं-कहीं सपाटबयानी भी मिलती है पर इससे भावावरोध नहीं होता है. कवियत्री शशिजी अपने उद्देश्य में सफल रहीं हैं. वे कहती हैं : 'जिस तरह बाग का सुन्दर पौधा गुलमोहर (फूल, पत्तियाँ आदि) आकर्शक रखता है, उसी तरह मनुष्य भी अपने जीवन चरित्र द्वारा सौन्दर्य को कायम रखे. निस्वार्थ भाव से सेवा करते हुए अस्मिता बनाए रखे. ऐसा सुन्दर, सत्य, शिव रूप लेकर वह समाज, देश और परिवार के लिए उपयोगी बनें और देश को सुरक्षित रखें.'

मैं कवियत्री श्रीमती शशि ओझाजी को उनके प्रथम काव्य संग्रह 'गुलमोहर' के अनंत बधाई और भविष्य में आने वाली कृतियों के लिए शुभकामनाएँ.

-द्वारा श्री बी.के.पंडा, अरबन अफेयर्स रेसिडेन्शियल काम्पलेक्स, ६७, खर मालकी, शिलांग-७९३००१, मेघालय

समीक्षा - गुलमोहर (काव्य-संग्रह), मूल्य : २०० मात्र

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1&20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः** पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मृति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान, बचपना सम्मान

2&20 ls 40 **वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री

3–40 **वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि

4-**सभी आयु वर्ग के लिएः** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री**

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथिः 15 fnlEcj 2020

lai dl dk;ky;%
सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
अनिल चक्की के सामने, लक्सों कंपनी के पहले, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड,
मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com,
hindiseva15@gmail.com, 9335155949

कोरोना लाक डाउन में अपने पड़ोसियों का ध्यान अवश्य रखें. अगर कोई हमारा पड़ोसी भूखे सोया तो हमारा मानव धर्म हमें धिक्कारेगा।

&विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा जनहित में जारी

तृतीय लघु कथा प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5000/रुपये मात्र

देश-विदेश का कोई भी लेखक इसमें प्रतिभाग कर सकता है. इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. आपको अपनी एक लघु कथा पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि लघु कथा 300 (तीन सौं) शब्दों से अधिक की न हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए चयनित प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए एक रचनाकार का चयन किया जाएगा. जिसे इलाहाबाद में आयोजित होने वाले साहित्य मेला में पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र स्वयं उपस्थित होकर ग्रहण करना होगा। विजेता को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;chvkbl,u 0553875

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०ः
9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।